>

Title: Discussion on the motion for consideration of the Nalanda University Bill, 2010 as passed by Rajya Sabha (Bill Passed).

MR. CHAIRMAN: Now, the House will take up Item No.18 – Nalanda University Bill, 2010.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRIMATI PRENEET KAUR): Mr. Chairman, Sir, on behalf of Shri S.M. Krishna, I beg to move:

> "That the Bill to implement the decisions arrived at the Second East Asia Summit held on the 15th January, 2007, at Philippines and subsequently at the Fourth East Asia Summit held on the 25th October, 2009, at Thailand for the establishment of the Nalanda University in the State of Bihar as an international institution for pursuit of intellectual, philosophical, historical and spiritual studies and for matters connected therewith or incidental thereto, be taken into consideration."

16.02 hrs

(Shri Francisco Cosme Sardinha *in the Chair*)

MR. CHAIRMAN: Motion moved:

> "That the Bill to implement the decisions arrived at the Second East Asia Summit held on the 15th January, 2007, at Philippines and subsequently at the Fourth East Asia Summit held on the 25th October, 2009, at Thailand for the establishment of the Nalanda University in the State of Bihar as an international institution for pursuit of intellectual, philosophical, historical and spiritual studies and for matters connected therewith or incidental thereto, be taken into consideration."

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): सभापति जी, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि कश्मीर जैसे महत्वपूर्ण विषय के बाद और फ़ारूख़ साहब की बेहतरीन तकरीर के बाद मुझे नालन्दा विश्वविद्यालय विधेयक पर बोलने का मौका दिया।

हमारे लिए यह सौभाग्य का विषय है कि जब से बिहार में हम लोगों की सरकार बनी, तब से नालन्दा विश्वविद्यालय का गौरव फिर से लौटा। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और मुख्य मंत्री नीतीश कुमार जी की पहल थी कि राज्य सरकार ने संकल्प लिया और उस 1495 संकल्प संख्या के द्वारा 17.8.2006 को नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया। बिहार विधान सभा द्वारा यूनिवर्सिटी ऑफ नालंदा अधिनियम 2007 पारित किया गया। 24 अगस्त, 2007 को यूनिवर्सिटी ऑफ नालन्दा की स्थापना की अधिसूचना हुई और 24 अगस्त, 2008 को भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, प्रथम विज़िटर नियुक्त हुए। हमारी सरकार ने लगभग 75 करोड़ रुपये इस पर खर्च किये और 500 एकड़ ज़मीन इसके लिए अधिकृत की जिसको 99 साल के पट्टे पर नालंदा विश्वविद्यालय को दिया जाएगा।

1603 बजे

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : सभापति जी, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि कश्मीर जैसे महत्वपूर्ण विÂाय के बाद और फ़ारूख़ साहब की बेहतरीन तकरीर के बाद मुझे नालन्दा विश्वविद्यालय विधेयक पर बोलने का मौका दिया।

हमारे लिए यह सौभाग्य का विÂाय है कि जब से बिहार में हम लोगों की सरकार बनी, तब से नालन्दा विश्वविद्यालय का गौरव फिर से लौटा। भूतपूर्व राÂट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और मुख्य मंत्री नीतीश कुमार जी की पहल थी कि राज्य सरकार ने संकल्प लिया और उस 1495 संकल्प संख्या के द्वारा 17.8.2006 को नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया। बिहार विधान सभा द्वारा यूनिवर्सिटी ऑफ नालंदा अधिनियम 2007 पारित किया गया। 24 अगस्त, 2007 को यूनिवर्सिटी ऑफ नालन्दा की स्थापना की अधिसूचना हुई और 24 अगस्त, 2008 को भूतपूर्व राÂट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, प्रथम विज़िटर नियुक्त हुए। हमारी सरकार ने लगभग 75 करोड़ रुपये इस पर खर्च किये और 500 एकड़ ज़मीन इसके लिए अधिकृत की जिसको 99 साल के पट्टे पर नालंदा विश्वविद्यालय को दिया जाएगा।

हम जानते हैं कि बिहार शिक्षा का स्रोत रहा है और बिहार से शिक्षा की गंगोत्री पूरी दुनिया में फैलती रही है। बिहार के लोग आज इंटैलीजेंट माने जाते हैं। यह इंटैलीजेंस हमें विरासत में मिला है। बिहार की सरजमीं ने आर्यभट्ट, चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, चाणक्य, गुरू गोबिन्द सिंह, भगवान महावीर, गौतम बुद्ध, शमशुल हक आदिलाबादी जो कि इस्लामिक स्कॉलर माने जाते हैं, शेरशाह सूरी, बड़े कवि रामधारी सिंह दिनकर, विद्यापति जी, ऐसे महान लोगों को, जहां डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और श्री जयप्रकाश नारायण, बाबू जगजीवन राम, कर्पूरी ठाकूर और मैं जिस क्षेत्र से आता हूं भागलपुर जो अंग की भूमि, महाराज दानवीर कर्ण जैसे महापुरूषों को जन्म

दिया है। इस भूमि ने पूरी दुनिया को शिक्षा दी है। आज दुनिया में ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालय की बात होती है, लेकिन दुनिया को सर्वप्रथम शिक्षा देने का काम इस विश्वविद्यालय ने किया है। पांचवीं-छठी शताब्दी ईसा पूर्व में यहां की यात्रा महात्मा बुद्ध ने की। पटना के निकट बड़ा गांव के निकट नालंदा विश्वविद्यालय के जहां अवशेष हैं, यहां इसकी स्थापना गुप्त वंश ने पांचवीं शताब्दी में की थी। विश्व के छात्रों को आकर्षित करने वाला, यह पहला संस्थान था, जिसमें दस हजार छात्र और दो हजार अध्यापकों के रहने की व्यवस्था थी। लेकिन आज तो छात्रों और अध्यापकों का रेश्यो घट गया है। यहां खड़े होकर सदस्य ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालय की मिसाल देते हैं, लेकिन आप अनुपात देखिए, दस हजार छात्रों पर दो हजार शिक्षकों की व्यवस्था थी। बौद्ध और सनातन धर्म की करीब-करीब 40 हजार पांडुलिपियां सहित हजारों हस्तलिखित दुर्लभ पुस्तकें वहां थीं। प्रसिद्ध चीनी विद्वान व्हेंगसांग और इत्सिंग ने यहां संस्कृत और दर्शन का अध्ययन किया था। महायान और हीनयान के अलावा वैदिक शास्त्र, दर्शन शास्त्र और तर्क शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, योग, गणित, चिकित्सा की शिक्षा यहां दी जाती थी। चीन, कोरिया, श्रीलंका, जापान, यूनान, मंगोलिया, सुमात्रा और थाइलैण्ड तक से लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए यहां आते थे। 12वीं शताब्दी में खिल्जी के हमले में पुस्तकालय को आग लगी तो वह पुस्तकालय 6 महीने तक जलता रहा। उसके बाद किसी ने फिक्र नहीं की।

महोदय, हमारी सरकार बिहार में बनी। बहुत दिनों के बाद एक अच्छी सरकार बिहार में आयी। जिससे लोगों की उम्मीदें बढ़ी। उसने भारत सरकार से बातचीत की और भारत सरकार ने भी उसमें योगदान दिया, इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। आप जानते हैं कि बिहार बदल रहा है और बदले हुए बिहार से पूरे देश को यह अपेक्षा थी कि बिहार में अच्छा काम हो। यदि कुछ राज्य तरक्की कर जाएं और कुछ राज्य पिछड़ जाएं तो यह देश महान नहीं बन सकता है। बिहार की नौ करोड़ जनता जो बहुत दिनों से उपेक्षित थी। वहां शांति व्यवस्था नहीं थी, कानून का राज्य नहीं था।

श्री शरद यादव : सभापति महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि बिहार कहां और किस जगह पहुंच गया है, जिस बख्तियार खिलज़ी ने नालंदा को तबाह एवं बर्बाद किया था, उसका कैम्प बख्तियारपुर में था। बख्तियारपुर में आज जो चीफ मिनिस्टर हैं, वे वहीं पैदा हुए और वहीं उनका लालन-पालन हुआ। इतिहास में कैसे इतिहास चक्र होता है कि जिस जगह पर तबाह करने वाले ने कैम्प किया था, उसी जगह के व्यक्ति ने फिर से उसे रिवाइव करने का काम किया।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : सभापति महोदय, आज बिहार के बारे में नेगेटिव चर्चा नहीं होती। अभी बिहार के चुनाव आने वाले हैं, वहां जो भी टूरिस्ट जाते हैं, वे वहां कुछ न कुछ बोल कर, बिहार का अपमान करके आते हैं, लेकिन उससे हमारा बिहारी स्वाभिमान ही बढ़ता है। आज बिहार की प्रतिव्यक्ति आय बढ़ी है। बिहार में ताकत है कि हमने नालंदा विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्तर का खड़ा हो, इसके लिए योजना में हमारा जो खर्च था, लोग मखौल उड़ाते थे। हमारी जो 4900 करोड़ की योजना थी, आज वह बढ़ कर 16 हजार करोड़, 20 हजार करोड़ का बजट बिहार का पहुंचा है। राज्य की स्थिति जहां 2005-06 में 3471 थी, वह आज आठ हजार करोड़ से आगे है, लेकिन बिहार में हमें और भी अपेक्षा है। नालंदा विश्वविद्यालय के गठन में, फिर से पुनर्निर्माण में केन्द्र मदद कर रहा है, इससे हम इंकार नहीं कर रहे हैं, इसके लिए हम आपका शुक्रियाअदा करते हैं। लेकिन हमारी अपेक्षा आपसे बहुत ज्यादा है।

मेरा सौभाग्य है कि मैं बिहारी हूं, मुझे गर्व है कि मैं बिहारी हूं। ...(व्यवधान) बिहारी होना कोई जुल्म नहीं है।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : There are three Members to speak. Be brief. Otherwise, they will not get a chance to speak. You may continue now.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : सभापति महोदय, हमें अपने लीडर की तरफ से बोलने के लिए कहा गया है और केवल मैं ही बोल रहा हूं। बिहार के नाम से इतनी दिक्कत नहीं होनी चाहिए। हमें इस बात का गर्व है, ...(व्यवधान) मैं अच्छी बात कह रहा था, आप धीरज से मेरी बात को सुनें। आप ज्यादा रोकिए मत, बिहार में कभी आपका भी राज रहा है।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, do not disturb the House. Please maintain decorum in the House.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : सभापति महोदय, हमने कहा कि हमें इस बात पर गर्व है, बिहार राज्य है और भारत का एक अभिन्न राज्य है। बिहारी कहने में, हमने कोई एंटी नेशनल नहीं कहा, जो किसी को एतराज हो रहा है। हमें इस बात पर गर्व है कि हमारे यहां ही नालंदा है, मैं जहां से सांसद हूं, हमारे यहां ही विक्रमशिला है। नालंदा हमारे यहां है, उसके लिए युनिवर्सिटी बन रही है, उसका मैं बहुत स्वागत करता हूं। हमारे यहां विक्रमशिला है, जहां अभी सौ एकड़ में खुदाई हुई है। विक्रमशिला भी बालवंश के समय से स्थापित है। विक्रमशिला की खुदाई हुई थी। भागवत झा आजाद साहब के जमाने में, हमारे मित्र कीर्ति आजाद साहब यहां बैठे हैं, इनके पिता जी मुख्य मंत्री थे, वे भागलपुर के सांसद थे। उनके प्रयास से वहां पर खुदाई हुई, 4600 अवशेष मिले थे। 16 एकड़ जमीन का अभिग्रहण हुआ, बीस साल पहले अभिग्रहण किया गया। विक्रमशिला कैंपस में खुदाई होगी तो हमारे मित्र निशिकांत दुबे जी के घर तक पहुंच जाएगी। विक्रमशिला को देखने के लिए बहुत से लोग आते हैं, मैं खुद माननीय प्रधान मंत्री जी से मिला था, मैं उनका आभारी हूं। मैं उनसे जब मिला तो उन्होंने आर्कलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के डीजी को वहां पहली बार भागलपुर भेजा, उन्होंने विक्रमशिला में विजिट किया, लेकिन वह भी बहुत दिनों से उपेक्षित है।

उसकी उपेक्षा हो रही है। मैं इस बात को इससे इसलिए जोड़ रहा हूं कि आज हम इतिहास रच रहे हैं, यह डिबेट बहुत बड़ी है, यह बिल बहुत बड़ा है, आप इसकी गम्भीरता को समझिए। आज लोग ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज की बात करते हैं, अंग्रेजी बोलने वालों के लिए तो ऑक्सफोर्ड बड़ा आदर्श हो सकता है, लेकिन हमारे लिए नालन्दा फिर से पुनर्स्थापित हो रहा है, इससे बढ़कर कोई बात इस देश के लिए इतिहास में हो नहीं सकती है। ...(व्यवधान) सभापति जी, आप ऐसी सख्ती हम पर न करें। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : Please address the Chair.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : आगे से मैं आपको ही देखूंगा।

सभापति जी, मैं आपके माध्यम से यह विषय सदन के सामने लाना चाहता हूं कि नालन्दा तो उस ऊंचाई पर पहुंचे, यह हमारे लिए गर्व की बात है, लेकिन विक्रमशिला विश्वविद्यालय को भी फिर से जागृत किया जाये, फिर से सरकार उस पर विचार करे, यह मैं सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं। सिर्फ रैफरेंस के तौर पर ये बातें मैंने आपसे कही थीं।

जहां इस बिल में इस बात की चिन्ता की गई है कि इस पर जो अध्ययन होगा, वह नालन्दा के इस विश्वविद्यालय के गठन के बाद बौद्ध मत का, दर्शनशास्त्र का, ऐतिहासिक अध्ययन होगा, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और शान्ति अध्ययन होगा, लोकनीति विकास अध्ययनों की तुलना होगी, भाषा-साहित्य पर बात होगी और मैं

जानता हूं कि पूरी दुनिया के लोग इसमें लगेंगे। खासकर इस बारे में थाईलैंड और पूर्वी एशिया के देशों में जो सम्मेलन हुआ था तो बहुत से देश इस काम में लगे हैं। इसमें कुलाधिपति होंगे, कुलपति होंगे, विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधि होंगे, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि होंगे, बिहार सरकार के दो प्रतिनिधि होंगे और तीन प्रख्यात शिक्षाविद् होंगे, लेकिन यह संस्था भी बहुत महत्वपूर्ण है, जैसा अन्य विश्वविद्यालयों में है, मैंने खुद अपने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अन्दर दो सांसद भेजे, मैं भी उसमें हूं तो इतनी बड़ी संसद, जो यह बिल पास कर रही है, इसके भी दो प्रतिनिधि इसमें जरूर होने चाहिए, यह हमारा सुझाव है।

मैं आपके जरिये सरकार से यह अनुरोध करना चाहता हूं कि हमारा बिहार तरक्की कर रहा है। राजनीति जब भी होगी, जब चुनाव होंगे तो अपनी-अपनी राजनीति के भेष में आइये, लड़िये, जीतिए-हारिए, लेकिन आपको बिहार की चिन्ता जरी सी करनी पड़ेगी।...(व्यवधान) मैंने पहले जीतना बोला, आपने बाद में बोला, आपका चांस नहीं है। लेकिन आज बिहार के साथ सौतेला व्यवहार हो रहा है। बिहार में आधिकारिक निजी निवेश के लिए हमने विशेष राज्य का दर्जा मांगा, वह नहीं मिल रहा। हमें बाढ़ का पैसा नहीं मिल रहा, हमने राष्ट्रीय उच्च-पथ करीब 1657 किलोमीटर अपने पैसे से बनाई और 969 करोड़ रुपया केन्द्र सरकार लेकर बैठी है, हमें दे नहीं रही, ताकि हम बदनाम हो जायें, लेकिन हम भी इनकी चालाकी समझते थे, इसलिए हमने राज्य सरकार के फंड से उस रोड की रिपेयर की है। अगर कोई किरायेदार किसी मकान में रहे और उसको पेंट करा ले तो मकान मालिक को उसका पैसा देना चाहिए, लेकिन केन्द्र सरकार की रोड है, वह उसका पैसा हमें नहीं दे रही।

हमने राज्य की सड़कें अच्छी कर लीं, कानून का राज स्थापित कर लिया, बिहार के अन्दर आज हम लोगों ने जब कहा कि आप बिजली के अन्दर कोल लिंकेज दीजिए, क्योंकि बिजली का संकट है तो हम नालन्दा विश्वविद्यालय तो बना लेंगे, लेकिन अगर हम बिजली नहीं देंगे तो हम लोगों को क्या जवाब देंगे। अगर आप चाहते हैं कि बिहार की वह संस्था देश का संस्थान माना जाये, भारत का चिन्ह माना जाये, भारत का प्रतिबिम्ब माना जाये तो आपको बिहार को भी चमकाना पड़ेगा।

बिहार के ऊपर इल्जाम तो बहुत लगते हैं, लेकिन मैं आपके जरिये एक अनुरोध करना चाहता हूं कि हम लोगों की आज जिस तरह से सपोर्ट, केन्द्र की मदद वहां पर घटाई गई है, हम लोगों ने कहा था कि अभी बाढ़ आई, मैं खुद कोसी का रहने वाला हूं, शरद जी कोसी के सांसद हैं, वहां बाढ़ आई, लेकिन एक रुपया केन्द्र सरकार ने हम लोगों को नहीं दिया। एक हजार करोड़ रुपया दिया, वह भी कोई फौजी गये, कोई और गये, उसमें काट लिया।

अभी बिहार में सूखा पड़ा है। उसका एक रूपया भी हम लोगों को नहीं मिल रहा है। ...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Hon. Member, please do not go beyond the purview of Nalanda University Bill.

...(*Interruptions*)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : सभापति महोदय, इसी सदन में कौन कहां-कहां जाता है ...(व्यवधान) और जब मैं बिहार का दर्द रखूं, तो आप ऐसा कह रहे हैं। हमें चेयर से आपका प्रोटेक्शन चाहिए। यहां शोर हो रहा है और आप भी मदद नहीं करेंगे, तो कैसे होगा? हम बिहार का दर्द रख रहे हैं। ...(व्यवधान) अगर बिहार के अंदर नालंदा विश्वविद्यालय बनेगा तो बिहार में बिजली चाहिए या नहीं। उस इलाके में पूरी दुनिया से लोग आएंगे। बिहार के अंदर पहले करीब 94 हजार टूरिस्ट आते थे। आज बिहार में टूरिस्ट्स की संख्या बढ़कर 4 लाख 23 हजार हो गयी है। वहां पूरी दुनिया से लोग आ रहे हैं। मैं यह आंकड़ा दे रहा हूं, आथेंटिकेट कर रहा हूं। मैं कोई पालिटिकल स्पीच नहीं कर रहा हूं। मैं यहां खड़ा हूं और मुझे पता है कि मेरे लिए मेरी पार्टी चुनाव का मंच सजाएगी और वहां से जो भाषण मुझे देना होगा, मैं दूंगा। इस प्लेटफार्म का उपयोग मैं बिहार के लोगों का दर्द रखने के लिए आपके सामने कर रहा हूं। आज हमारे साथ अन्याय हो रहा है। राज्य के लिए जो ग्रास बजटरी सपोर्ट था, वह 34 पर्सेंट से घटाकर 23 पर्सेंट कर दिया गया। बिहार के साथ आपने कदम बढ़ाया तो हमने आपका शुक्रिया भी अदा किया। हमने इसमें कोई कंजूसी नहीं की। हमने कहा कि आपने बड़ा अच्छा काम किया और सपोर्ट किया। आज बिहार के साथ जो अन्याय हो रहा है, उस दर्द को दूर करने के लिए आप केंद्र सरकार की ओर से बराबर की नजरों से देखिए। आपके वहां 9 ही एमएलए हैं। अगर 9 एमएलए हैं तो क्या हुआ, हम सब आपके गैर नहीं हैं। राजनीति में ऐसा होता है, कभी कर्नाटक में वर्ष 1992-94 में हमारे चार ही एमएलए थे, लेकिन आज वहां हमारी सरकार है। आज आपके नौ एमएलए हैं तो कुछ काम करके दिखाइए, तब आपका खाता खुलेगा, नहीं तो नौ की जगह आपकी सीटें और कम हो जाएंगी।

MR. CHAIRMAN: Please conclude. Now, you are going to other parts of the area.

...(*Interruptions*)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : इसलिए मैं आपके जरिए अनुरोध करना चाहता हूं कि सरकार इस बात पर विचार करे।

महोदय, मैं अब कंक्ल्यूड करता हूं और आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि जो नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुयी है, इसके लिए मैं बिहार सरकार और केंद्र सरकार को बहुत धन्यवाद देता हूं और साथ ही यह गुजारिश करता हूं कि नालंदा के बाद आप आराम से बैठ मत जाइएगा। इसके बाद विक्रमशिला की स्थापना का बिल मैडम जब आप लाएंगी, तो मैं, कीर्ति आजाद जी और निशिकांत दुबे जी, तीनों मिलकर और पूरा सदन आपको बधाई देगा। मैं मानता हूं कि देश के लिए आज बहुत ऐतिहासिक दिन है कि हम इस बात पर गर्व करें कि हमें अपने देश की संस्कृति पर गर्व करना है। हमें अपने देश की शिक्षा पद्धति पर गर्व करना है। हमें मैकाले की शिक्षा पद्धति पर नहीं नालंदा की शिक्षा पद्धति पर गर्व करना है। ऐसे संस्थान को फिर से पुनर्जीवित करना है।

डॉ. गिरिजा व्यास (चित्तौड़गढ़): सभापति जी, आपने मुझे अवसर दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद देती हूं। मैं विषय पर बोलूंगी, लेकिन जवाब जरूर दूंगी। जवाब इस बात से कि यूपीए की सरकार और एनडीए की सरकार के दिए हुए उस समय के अर्थ और अभी के अर्थ दोनों के बारे में आपके अगले बोलने वाले एमपी साहब जरूर बतायें, यह मैं आपके माध्यम से आपसे आग्रह करूंगी। बोलने से पहले मैं निवेदन कर दूं कि किसी भी राज्य के साथ किसी मतभेद का, किसी मनभेद का, किसी सौतेले व्यवहार का या किसी अन्याय की पोषक यूपीए सरकार नहीं रही है और यही वजह रही है कि नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना का फैसला उस भूमि पर किया गया, जिस भूमि में गौतम बुद्ध पैदा हुए, महावीर पैदा हुए, गुरू गोबिन्द सिंह जी पैदा हुए और निश्चित तौर पर परंपरायें यहां पैदा हुयी।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: There should be no cross talks in the House.

...(*Interruptions*)

डॉ. गिरिजा व्यास : 15 जनवरी, 2007 और 25 अक्टूबर, 2009 को फिलीपींस और थाइलैंड में चौथी और दूसरी पूर्वी एशिया शिखर बैठक में बौद्धिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक अध्ययन के अनुशीलन के लिए बिहार राज्य में अंतर्राष्ट्रीय संस्था के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए किए गए विनिश्चयों को क्रियान्वित और उससे संबंधित विषयों वाले विधेयक पर चर्चा हेतु आपने मुझे भी बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं। महोदय, मैं विषय पर ही बोलूंगी और सबसे पहले मैं सरकार को विशेषकर यूपीए की सरकार को धन्यवाद देना चाहती हूं। मैं बिहार सरकार को भी धन्यवाद दूंगी कि उन्होंने समय पर जमीन आदि उपलब्ध करा दी।

यूपीए सरकार के दृष्टिकोण, विचार, कौनसैप्ट कि किस तरह हम अपने पुराने भारत को फिर से पुरस्थापित कर सकें, इस दिशा में जो प्रयास किया गया, उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहती हूं।

अल्लामा इकबाल ने कहा था - यूनान-ए-मिश्र रोमां, सब मिट गए जहां से, कायम है अब तक भी नामो निशां हमारा। यदि हम नालंदा जाएं जो अब खंडहर है या जिन्हें तक्षशिला जाने का मौका मिला, जो इस्लामाबाद गए हों या विक्रमशिला जिसकी बात अभी माननीय सदस्य कर रहे थे, मुझे विश्व के अनेक विश्वविद्यालय और इन तीनों पुराने विश्वविद्यालयों को देखने का मौका मिला। निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि जब हम नालंदा, तक्षशिला या विक्रमशिला के परिसर में जाते हैं, तो लगता है कि जैसे हम ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज और बड़ी-बड़ी यूनीवर्सिटीज़ को भूल गए हैं। चारों तरफ से एक प्रकार आज भी वहां शिक्षा का जो आलोक है, वह दैदीप्यमान हो रहा है। इसलिए हम सरकार के इस फैसले का स्वागत करते हैं।

मैं आपको पिछले कुछ दशक में ले जाना चाहती हूं जब नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। नालंदा पांचवीं सैंचुरी में गुप्तवंश द्वारा, जैसे सदस्य महोदय बता रहे थे, उसकी स्थापना की गई। महायान-हीनयान स्कूल जो बुद्धिज़्म के थे और ब्राह्मण वैदिक टैक्स्ट फिलॉस्फी, लॉजिक, थियोलॉजी, ग्रामर, सबके अध्ययन के लिए नालंदा एक ऐसा विश्वविद्यालय था जहां दस हजार स्टूडैंट्स और दो हजार टीचर्स एक साथ काम करते थे।

ह्वेन सांग जो चाइनीज़ पिलग्रिम यहां आए, उन्होंने इसकी विस्तृत व्याख्या की। आज भी नालंदा के खंडहर इस बात के साक्षी हैं कि उस वक्त भी हम लोग बौद्धिक स्तर पर, दार्शनिक स्तर पर और विशेषकर वैदिक, बौद्ध, जैन और बाद में चूंकि पटना साहिब और जैसे कहा गया कि गोविंद सिंह जी का जन्म भी वहीं पर हुआ, वहां सिखिज़्म का भी एक वातावरण बना। बिहार में उस वातावरण को देने का सारा श्रेय उस वक्त की व्यवस्था को जाता है। मैं इसी के साथ तक्षशिला विश्वविद्यालय का जिक्र भी करना चाहूंगी जो आज इस्लामाबाद के पास है। वहां चंद्रगुप्त मौर्य ने जिस प्रकार आलोक फैलाया और उसकी स्थापना की, उसके बाद तक्षशिला चाणक्य, चार्वाक और चरक ऋषि, जिन्होंने चरक संहिता बनाई, उनका भी आधार रहा। तक्षशिला में उन्होंने न केवल शिक्षा ग्रहण की बल्कि वहां पढ़ाया भी। आज का अर्थशास्त्र इस बात का गवाह है कि चाणाक्य की अर्थनीति अप्रासंगिक नहीं है। इसी प्रकार से चरक संहिता भी, चरक ऋषि द्वारा जो बनाई गई, आज भी उनकी पंचकर्म थैरेपी किसी न किसी रूप में विश्वभर में व्याप्त है। वहां हाइयान का आना और 405 ईस्वी में इस बात का प्रतीक है कि उस वक्त सारे विश्व, विशेषकर साउथ ईस्ट एशिया और एशिया भर से दूर-दराज के जो लोग पढ़ने के लिए आते थे, उन्हें सब प्रकार का ज्ञान मिलता था।

आपने विक्रमशिला का जिक्र किया। उसी के साथ-साथ मैं यह भी निवेदन करना चाहती हूं कि वहां कुछ अन्य विश्वविद्यालय भी उसी जमाने में मौजूद थे। मैं उनका जिक्र इसलिए करना चाहती हूं कि जैसे मैंने कहा, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और उसी के साथ-साथ वैदिक व्यवस्था, तीनों पर एक साथ शिक्षा होती थी। इतिहास के तीन हजार वर्ष पीछे जाना और उसके कौनसैप्ट - सा विद्या या विमुक्तये, विद्या है जो हमें मुक्ति प्रदान करती है, हमें अपने बंधनों से मुक्त करती है। वहां इस बात का सिद्धान्त था। मैं गुणशिला विश्वविद्यालय की जिक्र इसलिए करना चाहती हूं कि आज हम वूमैन्स एजुकेशन की बात करते हैं, लेकिन गुणशिला जो 500 बीसी में बिहार में, आपके राज्य में ही स्थित था, वहां मुख्य रूप से जैन धर्म-ओ-दर्शन का बिंदु था, वहां वूमैन्स एजुकेशन की व्यवस्था थी और उसे एक तरह से वूमैन्स एजुकेशन कहा जा सकता है। कुंडलपुर जिसकी स्थापना 500 बीसी में हुई थी, वह फिज़िकल ट्रेनिंग का इंस्टीट्यूट था जिस पर आज आश्चर्य होता है कि उस जमाने में भी इस तरह के इंस्टीट्यूट हो सकते थे। इसी के साथ कांची जो सौ बीसी में 500 एडी तक रहा, उनका भी अपना स्थान है। 400 एडी से 1200 एडी तक यूयान ने 14 विद्या और 64 कलाओं का नालंदा विश्वविद्यालय में जो जिक्र किया है, वह इस बात का प्रतीक है। 78 डिसिप्लन उस समय वहां पढ़ाए जाते थे।

उस वक्त आयुर्वेद से धनुर्वेद तक और वेद से विमान तक की शिक्षा नालंदा विश्वविद्यालय में दी गयी थी। इसलिए यह सोचा गया, मैंने थाईलैंड और फिलीपींस का जिक्र किया, कि हम क्या वैसी ही स्थापना फिर से नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में कर सकेंगे। जहां एशिया अभी फिर से उभरता है, फिर से करवट लेने की दिशा में है, फिर से भारत एक नये चमकते हुए सितारे के रूप में उभरकर सामने आया है, वह भारत एशिया के माध्यम से चमक सके। इसलिए इस स्थापना का निर्णय लिया गया। इसके लिए मैं प्रधानमंत्री जी, आदरणीय सोनिया जी और प्रणब मुखर्जी जी, जो उस समय इस कार्य को देख रहे थे, इन तीनों को ही बहुत बधाई देना चाहूंगी।

महोदय, बख्तियार खिलज़ी ने गौरवशाली कहानी के वे खंडहर भले ही नष्ट कर दिये, लेकिन पुनः संस्कृति के निर्माण में आज हम उनके योगदान को नहीं भूल सकते। इसलिए उस योगदान को जो इसमें दिया, उनको याद करते हुए पुनः संस्कृति के निर्माण,. संस्कृत, पाली, प्राकृत और अंग्रेजी के द्वारा एशिया का पुनः जागरण हो रहा है। आज हमारी जो थिंकिंग और थॉट्स बेस है, वह यूरो बेस है। उससे हटकर भारत की अगुवाई में एशिया जो एक नया रूप धारण कर रहा है, उसमें आसियन के साथ-साथ जहां एक तरफ हम आर्थिक उन्नति के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में जा रहे हैं, वहीं नालंदा यूनीवर्सिटी के माध्यम से हम प्राचीन गौरव को प्राप्त करेंगे जिसमें कुछ नया भी है, कुछ पुराना भी है। यूनेस्को तक ने दर्शन को एक आधार मान लिया है। उस वक्त बिजनेस मैनेजमैंट, आई.टी, ज्ञान और विज्ञान का कोई भी क्षेत्र हो, उन क्षेत्रों में उस पुरानी विद्या का आना एक नये सूत्र का सूचक है।

महोदय, मैं यहां यह निवेदन करना चाहती हूं कि केवल दर्शन, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन और धर्म तक सीमित हमारी ज्ञान और विज्ञान की परम्परा नहीं थी। जहां विज्ञान समाप्त होता है, वहीं से ज्ञान की शुरुआत होती है। भारत ने जीरो का आविष्कार या लीलावती सूत्र, कम्प्यूटर का सारा बेस उस लीलावती सूत्र पर आधारित है, इतिहास इस बात का साक्षी है कि आज भी उसका सम-सामयिक मूल्य है। मूल्यपरक एजुकेशन जिसमें चाहे हिन्दु हो, जैन हो या बौद्ध हो, उसमें मूल्यपरक एजुकेशन आधार बने, उसका निषेध न हो, इस बात को कहा गया।

महोदय, मैं यहां यह निवेदन करना चाहती हूं कि उस वक्त आर्किटेक्ट, गणित, विज्ञान, खगोलशास्त्र, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष शास्त्र आदि का जो अध्ययन

किया जाता था, इस यूनीवर्सिटी में उन सबका जिक्र है। लेकिन एक बात का भय, जिसका हमेशा हर एक व्यक्ति को रहता है, उसका भय हमें भी है कि कहीं यह केवल उन ब्यूरोक्रेट्स के हाथों में न पड़ जाये। इसलिए माननीय सदस्य ने यह बात उठायी कि पार्लियामैंट से भी दो सदस्य जायें, पर एक्सीलैंसी यहां पर वहां का निर्णय हो, इस बात की तरफ मैं सरकार का ध्यान जरूर आकर्षित करना चाहूंगी।

महोदय, यहां पर धर्म की अलग व्यवस्था नहीं है। जीवन दर्शन के रूप में धर्म की व्याख्या की गयी है। प्लूरेलिज्म यानी बहुतवाद हमारा आधार रहा है चाहे वह जैन हो, बौद्ध हो। इसलिए अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांत आज भी मूल्यपरक हैं, कल भी मूल्यपरक थे और रहेंगे। भारत के सिद्धांत अन्य आश्रय भागों में प्रवाह, मैं यहां पर यह कहना चाहूंगी कि उस समय जब यहां पर वृहदेश्वर मंदिर था, वहां पर उसी वक्त अंगकोरवाट, इंडोनेशिया और कम्बोडिया में उनकी स्थापना की गयी थी, जो भारतीय इम्पैक्ट के प्रभाव को दिखाता है। भारतीय संस्कृति शांति की संस्कृति है, सहायता की संस्कृति है। हमने कभी भी किसी भी धर्म के अलग रूप को अपनाने की कोशिश की, तो उसमे आधिपत्य कहीं भी नहीं रहा, बल्कि उसमें यह बात रही कि समवन्य के साथ हम उसे ग्राह्य कर सकें। ग्राह्यता, एसीमिलेशन हमारा मूल आधार रहा और यही वजह है कि आर्ट और लिट्रेचर या दूसरी अन्य विधियों पर भी पूरे साउथ ईस्ट एशिया में भारत का प्रभाव पड़ा था। यही वजह रही कि नागार्जुन हो या ह्वेनसांग हो, वे यहां पर आते रहे और जिस शिक्षा का मूल आधार है--आमभद्रा पूत्योअन्तु यानी अच्छा ज्ञान सभी ओर से आये, तो अच्छा है, इस बात की ओर ध्यान दिलाते रहे।

मैं निवेदन करूंगी कि इसी परंपरा को कायम रखते हुए आजादी की लड़ाई से लेकर आज तक कांग्रेस इस बात के लिए प्रतिबद्ध रही है। गांधी जी ने कहा था कि हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहां पर चारों तरफ से गवाक्ष खुले हुए हैं, बाहर की हवाएं भी आएंगी, बाहर के विज्ञान भी आएंगे, लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि हम उसमें कैसे स्थिर बने रहें। इसलिए इस बात की जरूरत है कि यह स्टेबिल्टी हम कैसे लाएं। इस स्टेबिल्टी के लिए सरकारें प्रयत्नशील रही हैं। नेहरू जी की डिस्कवरी ऑफ इंडिया हो या और किसी स्वरूप में उनके दर्शन को पढ़ लिया जाए, इसके बाद हमारे देश में जो विद्वान हुए हैं, उनके विचारों में इस बात का पोषण रहा कि चाहे हमारी अर्थव्यवस्था हो या राजनीति हो, वह मूल्यपरक होनी चाहिए और हम आज भी उस पर कायम हैं। यह नालन्दा विश्वविद्यालय उस मूल्यपरकता को वापस दर्शाएगा, ऐसा हमारा विश्वास है। केवल इस भावना के लिए कि उस समय के नालन्दा, तक्षशिला या विक्रमशिला विश्वविद्यालयों के कारण भारत शिक्षा का हब था और आज भी यूपीए सरकार का आधार है कि भारत विश्वविद्यालय एवं अन्य शिक्षा के माध्यम से शिक्षा का हब बने। फिर भी इतना सारा धन शिक्षा विभाग को देना, शिक्षा की उच्चता को, खासकर उन विश्वविद्यालयों के पैटर्न पर ही, जो हमारे प्राचीन विश्वविद्यालय थे, नए कांसेप्ट को जन्म देने की कोशिश कर रहे हैं। यह नालन्दा विश्वविद्यालय इस दिशा में एक बहुत बड़ी छलांग है, बहुत बड़ा कदम है। मुझे समय की सीमा मालूम है, इसलिए मैं कहना चाहूंगी कि जो सपना हमारे विचारकों ने देखा था, उसके आधार पर ही यह विश्वविद्यालय हो। यहां पर सिब्बल जी बैठे हुए हैं, उनका ध्यान आकर्षित करते हुए मैं कहना चाहती हूं कि आपकी रिपोर्ट के आधार पर ही आज यूनिवर्सिटीज के जो हालात हैं, वे बड़े गंभीर हैं। उन हालात को सुधारने के लिए आप जो प्रयास कर रहे हैं, सरकार के प्रयासों की मैं प्रशंसा करती हूं, लेकिन बहुत कुछ करना अभी बाकी है। सप्रदायवाद जिस तरह से उसमें पेनिट्रेट हुआ है, पिछली सरकार ने जिस तरह से कुछ विषयों को डालकर उन यूनिवर्सिटीज को सांप्रदायिकता के घेरे में डाला है, नालन्दा विश्वविद्यालय इस बात का गवाह है, तक्षशिला इस बात की गवाह है कि वहां पर उस समय सप्रदायवाद के नाम पर, धर्म जो आज सप्रदायवाद का इक्विवेलेंट हो गया है, बल्कि वहां धर्म का अर्थ था वैल्यूज, मूल्य। हम किसी भी मूल्य को नहीं छोड़ सकते, लेकिन हमारी यूनिवर्सिटीज को एक करवट लेनी होगी। उनको दिए हुए जो पाठ्यक्रम, जिनसे सांप्रदायिकता आई, उनसे उनको मुक्त करना होगा, राजनीति से मुक्त करना होगा और सबसे ज्यादा उनको ब्यूरोक्रेटिक आक्रोश से उनको मुक्त करना होगा। आज अनेक विश्वविद्यालय लिटिगेशन में फंसे हुए हैं, इसलिए मैं चाहूंगी कि उनके लिए अलग से व्यवस्था हो, ताकि वे पूरे समय, 365 दिन इसमें न लगे रहें। आज नालन्दा विश्वविद्यालय की इस प्रकल्पना के बारे में मैं केवल यही कह सकती हूं कि हमारी परंपराओं में जिस बौद्ध धर्म ने हमें मध्यम मार्ग दिया, जिस भारतीय दर्शन ने आपो सर्वभूतेषू की बात करके सबकी समानता और संगच्छद्धवं संवदद्धवं की बात करके सभी को साथ लेकर चलने की बात कही। जिस प्रकार से हमारे जैन धर्म में नवोंकार का मंत्र दिया गया, उसे देखें नमो अरिहन्ताणं, नमो सिद्धाणं, नमो अय्याणं और नमो सब्बसाधूणां की बात के जरिए सभी धर्मों के प्रति जो आदर की भावना सिखाई और गुरू गोविन्द सिंह जी ने बिहार में जिस प्रकार की समरसता का मार्ग दिखाया, नालन्दा विश्वविद्यालय उसके अनुरूप होना चाहिए, आज भी आवाज गूंजनी चाहिए - धम्मं शरणं गच्छामि, बुं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि। यह नारा देना होगा। अति विज्ञान और अति अर्थ हमें नीचे धकेल रहा है, इसलिए मध्यम मार्ग की आवश्यकता है जो असम्पृक्त संस्कृति को पुनः संवेदनशीलता में डाले। शिक्षा का एक आवश्यक लक्षण है संवेदनशीलता। वह संवेदनशीलता जो विश्वविद्यालयों से खो गयी है, उसको नालन्दा विश्वविद्यालय के माध्यम से फिर से पुनर्स्थापित करेंगे जिससे अन्य विश्वविद्यालय भी सीखेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। अंत में, मैं कहना चाहती हूं कि भारतीय संस्कृति तब भी प्रासंगिक थी, आज भी प्रासंगिक है और यही वजह है कि हमारे यहां चार पुरूषार्थों की व्याख्या है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

हमने कभी भी अर्थ को और काम को भी, धर्म का अर्थ यहां पर रिलीजन नहीं है, धर्म का अर्थ है एथिक्स, मोरल, मोरेलिटी पर आधारित अर्थ, कमाया हुआ अर्थ और मोरेलिटी के आधार पर भोगा हुआ काम, जिसमें अन्य चीजें विवाह से लेकर प्रसाधन आदि भी आते हैं, उनका उपयोग यहां पर निषेध नहीं किया गया है। जो अंत में मोक्ष की तरफ ले जाए, सभी के लिए ग्राह्य हो, उसकी ओर संकेत किया गया है। नालन्दा, तक्षशिला और विक्रमशिला इसके उदाहरण थे। फिर से ये विश्वविद्यालय उसके आधार बन सकें, मध्यम मार्ग से चलते हुए हम विज्ञान की भी प्राप्ति करें। यहां मैं राजीव जी का जिक्र जरूर करना चाहूंगी। राजीव गांधी जी ने इसी सपने के अनुरूप सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना भारत में की। उसी के अनुरूप विश्व में इंडिया के शोज़ कराए, उनमें उनका तात्पर्य यही था कि केवल हमारी परफार्मिंग आर्ट से हम आगे जाते हुए अन्य विधायों में भी अन्य देशों को अपनी संस्कृति, अपनी चेतना, अपनी गति, अपना संगीत जो हमारी संस्कृति है, उसके दर्शन करा सकें। उनका सपना उस काल में भी पूरा हुआ और आज यूपीए सरकार प्रतिबद्धता के साथ उस सपने को जिसमें गांधी जी का भी सपना है, जिसमें हमारे मूल्यपरक उस युग के, उस सांस्कृतिक विरासत के वैदिक सपनों का भी सार है, उन्हें लेकर चल रही है। ऐसे अतुल्य, ऐसे अनुपम विश्वविद्यालय के लिए जो यह बिल पेश किया गया है, उसमें हमारी शुभकामनाएं भी हैं और इस बिल के लिए यूपीए सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): सभापति महोदय, आपने मुझे नालन्दा विश्वविद्यालय विधेयक 2010 पर बोलने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। भाई शाहनवाज जी का भाषण मैंने सुना। उन्होंने प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय के बारे में, वहां से जो तमाम हमारी पूर्व विभूतियां हुई, उनके बारे में बड़े विस्तार से बताया। इसी तरह बहन गिरिजा व्यास जी का भाषण भी बहुत अच्छा रहा। कुछ देर के लिए ऐसा लगा जैसे हम लोग किसी विश्वविद्यालय में बैठे हैं और गिरिजा व्यास जी व्याख्यान दे रही हैं। उन्हें सुनना मन को बहुत भाया।

भारत की संस्कृति और सभ्यता की कोई मिसाल नहीं है। सर्वभौम पंचशील को मानने वाला यह देश जो विश्व में अपना एक स्थान रखता है। यहां की लोकतांत्रिक व्यवस्था, जैसा पहले लोगों ने कहा और विदेशियों ने भी कहा था कि भारत सोने की चिड़िया है, यह सत्य बात है। यहां की प्राकृतिक धरोहर की कोई मिसाल अन्य देशों में नहीं है। बहुत विस्तार से बहन गिरिजा व्यास जी ने और भाई शाहनवाज जी ने अपनी बात रखी।

मैं इस बिल का पुरजोर समर्थन करते हुए अपनी कुछ बातें कहना चाहूंगा। दुनिया का सबसे प्राचीन और सबसे प्रमुख शिक्षा केन्द्र नालन्दा विश्वविद्यालय रहा है। जिसे पुनर्जीवित करने के लिए यह विधेयक यहां पेश किया गया है। जनवरी 2007 में दूसरे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, थाईलैंड में इस पर अन्य देशों के साथ विचार किया गया। उसमें यह कहा गया था कि बौद्धिक, दार्शनिक और ऐतिहासिक अध्ययन का केन्द्र नालन्दा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित किया जाए। इस पर जिन देशों ने सहयोग देने की बात कही, उनका भी आज सदन के माध्यम से हम लोग आभार व्यक्त करते हैं और उन्हें धन्यवाद देना चाहेंगे।

जहां तक देखा गया है, खासकर यह विश्वविद्यालय जो पुनर्जीवित किया जा रहा है बिहार में, तो वहां की स्थानीय सरकार ने तुंत इसके लिए 500 एकड़ जमीन अधिगृहित करके केन्द्र को देने का काम किया है। नालन्दा विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय संस्था का केवल एक ही संकल्प है कि दक्षिण और पूर्व एशिया को जोड़ने वाली 21वीं सदी की शिक्षा को किस प्रकार से पुनर्जीवित कर दें, एक साथ कर दें।

बौद्धिक मिलन का एक स्थल नालंदा विश्वविद्यालय को हम पुनर्जीवित करने जा रहे हैं। इसमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था तथा आध्यात्मिक दर्शन को जोड़ने वाला, पुरातन एवं आधुनिक चिंतन को समाहित करने वाला, यह अनुसंधानात्मक विश्वविद्यालय होगा, जो अपने आप में एक मिसाल होगा। मैं ज्यादा डिटेल में नहीं जाना चाहूंगा, लेकिन एक तरीके से यह मॉडल विश्वविद्यालय बनेगा, जो पीपीपी विश्वविद्यालय होगा। राजगीर नामक जगह पर, 500 एकड़ जमीन को अधिगृहीत करके, इसका निर्माण कार्य शुरु कराया जा रहा है। पूरे विश्वविद्यालय के निर्माण में 1005 करोड़ रुपये खर्च होंगे और मैं केन्द्र सरकार को मैं बधाई दूंगा कि 50 करोड़ रुपये का बजट अभी उन्होंने इसके लिए स्वीकृत किया है। विश्वविद्यालय के बिल की कॉपी अभी मैं देख रहा था, उस गवर्निंग बॉडी में विदेश मंत्रालय, मानव संसाधन मंत्रालय और बिहार राज्य के प्रतिनिधि भी उसमें होंगे। अभी शहनवाज भाई यह कह रहे थे कि वहां के स्थानीय एमपीज को भी उसमें सम्मिलित किया जाए। यह बात सही है कि हमने यहां बहुत सी कमेटियां बनाई हैं, गवर्निंग बॉडीज बनाई हैं और उनमें स्थानीय सांसदों को भी समाहित किया गया है। माननीया गिरिजा व्यास जी ने भी इसका समर्थन किया है कि ऐसा होना चाहिए, ताकि उसका मैनेजमेंट सुचारू रूप से और अच्छी तरह से चल सके। यह बात उसमें होगी।

हमारे इलाहाबाद में भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय है, उसमें भी हमारे स्थानीय सांसद वहां हैं, वहां उसमें दो सांसद हैं और मैं इसका पुरजोर समर्थन करता हूं। उस विश्वविद्यालय की पढ़ाई के बारे में बड़े विस्तार से बात हुई है कि पर्यावरण, भाषा, साहित्य, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, शांति, अध्ययन और इतिहास, बौद्ध-धर्म दर्शन की तुलनात्मक शिक्षा पर जोर होगा और ऐसी शिक्षा वहां पर दी जाएगी। इसमें चाहे हमारे वैदिक, सांस्कृतिक, आधुनिक और प्राचीन जो भी हमारे शास्त्र थे, उनका समावेश करके, हम उस विश्वविद्यालय में एक नयी शुरुआत करेंगे। बहुत से हमारे शास्त्रों का विलोप हो गया था, उन्हें भी पुनर्जीवित करने का एक रास्ता इसमें निकलेगा। नोबल पुरस्कार विजेता आमर्त्यसेन जी की अगुवाई में परामर्शदात्री समिति जो गठित हुई है, यह एक बहुत अच्छी बात है कि उसमें विद्वतजन भी हैं। मेरे ख्याल से यह बहुत जल्दी बन जाएगा। एक सुझाव और आया है कि बौद्ध धर्म के गुरू, जिन्होंने हिंदुस्तान से हमेशा संबंध स्थापित करने की कोशिश की है, दलाई लामा जी को भी अगर उसमें रखा जाए, तो बहुत अच्छा होगा। यह मेरा सुझाव है।

भारत के बौद्ध सर्किट से जुड़ने और पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए केन्द्र सरकार ने और स्थानीय सरकारों ने बहुत प्रयास किये हैं। उसी कड़ी में नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्जन्म हो रहा है और यह उसी कड़ी की एक रूपरेखा है। यह विश्वविद्यालय पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप पर आधारित होगा, जिसमें सबसे बड़ा फंड केन्द्र सरकार का होगा। अन्य देश भी उसमें मदद करेंगे, लेकिन भारत मेजबान देश है, उसे पहल करनी चाहिए और यह अच्छी बात है।

अभी बहन गिरिजा व्यास जी ने अपने उद्बोधन में एक बात कही है कि आज के वर्तमान विश्वविद्यालयों में तमाम ऐसे झगड़े हैं, उसके बिल लेकर हमारे सम्मानीय मंत्री जी अभी आयेंगे।

सभापति महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि हमारे इस प्रकार से बहुत से प्राचीन विश्वविद्यालय हैं, उन्हें सुदृढ़ और पुनर्जीवित करने की जरूरत है। वहां की स्थिति बहुत दयनीय है। विदेशी विश्वविद्यालय के लिए जैसा कहा कि एजुकेशन हब यहां लाएंगे, मेरे खयाल से यह उचित नहीं होगा। हमारे यहां इतने विश्वविद्यालय हैं कि अगर उनकी मनेजमेंट व्यवस्था, जैसे इलाहाबाद को मिनी ओक्सफोर्ड कहा जाता था, आज उसे केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। आज वहां बहुत दिक्कतें हैं, जिन्हें सुधारने की जरूरत है। मैं मंत्री जी से कहूंगा कि विदेशी विश्वविद्यालय का सपना न देखकर, बल्कि अपने यहां के विश्वविद्यालयों को अगर पुनर्जीवित किया जाए, तो बहुत अच्छी बात होगी।

इन्हीं बातों के साथ अपनी बात समाप्त करते हुए मैं एक आखिरी बात कहना चाहता हूं कि विक्रमशिला विश्वविद्यालय की जो बात आई है, अगर नालंदा को ले रहे हैं, तो विक्रमशिला विश्वविद्यालय को भी पुनर्जीवित किया जाए। इसका समर्थन करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

डॉ. बलीराम (लालगंज): सभापति जी, आपने मुझे इस विषय पर बोलने दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। इतिहास इस बात का गवाह है कि भारत की संस्कृति और सभ्यता, साइंस और टेक्नोलोजी दुनिया के देशों में सबसे विकसित रही है। हम जो विधेयक लाए हैं, नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित, यह हमारी संस्कृति और सभ्यता तथा देश की धरोहर रहा है। अभी हमारे शाहनवाज भाई बता रहे थे कि वह सिर्फ बिहार की धरोहर है। यह केवल बिहार की ही धरोहर नहीं है, बल्कि इससे हमारे देश की पहचान होती है। जहां दुनिया के देशों के लोग हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता को सीखने के लिए, साइंस और टेक्नोलोजी जानने के लिए यहां आते थे। हमें खुशी है कि यह विधेयक लाया गया है, यह सचमुच हमारी संस्कृति और सभ्यता को अक्षुण्ण बनाने के लिए लाया गया है, लेकिन इस विधेयक को लाने में विलम्ब हुआ है। आजादी के बाद से ही इस विधेयक को लाना चाहिए था, लेकिन अब लाया गया है, तो निश्चित रूप से इससे पूरे भारतवर्ष का गौरव जुड़ा हुआ है। चाहे नालंदा विश्वविद्यालय हो, चाहे विक्रमशिला विश्वविद्यालय हो, चाहे तक्षशिला विश्वविद्यालय हो, ये हमारी धरोहर रही हैं इसलिए महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि जो शिखर सम्मेलन हुए हैं, चाहे वे थाईलैंड में हुए हों, चाहे वे फिलीपीन्स में हुए हों और लोगों ने नालंदा विश्वविद्यालय को जो पुनर्जीवित करने की बात कही है, उसे स्थापित करने की बात कही है, वह बहुत अच्छी है। बिहार सरकार ने पांच सौ एकड़ जमीन उपलब्ध कराई है तथा पांच सौ एकड़ जमीन और उपलब्ध कराने की योजना है। हमारी भारत सरकार ने 50 करोड़ रुपया दे कर उसे संचालित करने की योजना बनाई है। निश्चित रूप से हम कहना चाहेंगे, हमारी संस्कृति और सभ्यता को यह अक्षुण्ण बनाएगी। इसमें जो देश पार्टनरशिप के तहत सम्मिलित हो रहे हैं, चीन भी, जहां सबसे ज्यादा बुद्धिस्ट हैं, वह भी इसमें सम्मिलित हो रहा है, थाईलैंड और बैंककाक भी सम्मिलित हो रहे हैं। तमाम देशों के लोग जो पूर्व में शिखर सम्मेलन हुए

हैं, वे आज यहां आ रहे हैं।

हम इतना निवेदन करेंगे कि इसमें हमारे भारत के लोगों की ज्यादा सहभागिता होनी चाहिए क्योंकि यह बिहार में स्थापित हो रहा है और भारत इसकी मेजबानी कर रहा है। भारत का ज्यादा धन भी लगेगा और जहां तक अनुमान लगाया गया है कि 1005 करोड़ रुपये से इसका पूरा विस्तार हो जाएगा। आज इस बात की जरूरत है कि जो यहां हमारे बौद्ध हैं, अध्ययन केन्द्र हैं, दर्शन शास्त्र और धर्म, इतिहास, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और शांति प्रबन्धन, भाषा, साहित्य और पर्यावरण है, निश्चित रूप से इससे हमारा देश विकसित होगा और आज जब हम इसे बड़े पैमाने पर स्थापित करेंगे तो यहां के लोग ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज जाना और तमाम दूसरे देशों में जो इस तरह के विश्वविद्यालय हैं, वहां लोग जाना भूल जाएंगे क्योंकि नालंदा में तो दूसरे देश के लोग आकर विद्या ग्रहण करते थे। लेकिन इस देश के ऊपर तमाम आक्रमण हुए हैं। उस आक्रमण में हमारे ये विश्वविद्यालय नष्ट हो गये थे लेकिन आज इस विधेयक के लाने से खुशी हो रही है कि कम से कम हमारी भारत सरकार इस तरफ पहल कर रही है कि कैसे हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को, साइंस और टैक्नोलॉजी को अभूतपूर्व बनाने के लिए प्रयास करें। इसलिए हम इस विधेयक का अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से समर्थन करते हैं।

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): सभापति महोदय, आपने मुझे इस चर्चा में भाग लेने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं इस 15वीं लोक सभा में नालंदा क्षेत्र से प्रतिनिधित्व करता हूं और मेरे लिए और मेरे समस्त क्षेत्र के वासियों के लिए अति गौरव की बात है कि नालंदा विश्वविद्यालय वहीं पर बन रहा है जहां पर प्राचीन विश्वविद्यालय था। मैं अपनी पार्टी जनता दल यूनाईटेड की तरफ से नालंदा विश्वविद्यालय के समर्थन के लिए खड़ा हुआ हूं। राज्यसभा ने 21-08-2010 को ही इस विधेयक को पास कर दिया था। अब यह लोक सभा में मंजूरी के लिए आया है। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने इस विधेयक को तैयार किया है और इस पर आम सहमति बनी। 25 अक्टूबर 2009 के शिखर सम्मेलन में इस पर आम सहमति बननी थी। मैंने भी एक वर्ष पहले इसी जुलाई के महीने में लोक सभा में शून्यकाल में नालंदा विश्वविद्यालय पुनर्स्थापना के मामले को उठाया था। यह जवाब केन्द्रीय विदेश मंत्री एस.एम.कृष्णा ने भी दिया था और कहा था कि अगले विधेयक में इसे लाया जाएगा। मैं केन्द्रीय सरकार के इस कदम की सराहना करता हूं। 427 ईसवीं में बना नालंदा विश्वविद्यालय 1197 ईसवीं तक रहा। लगभग 650 वर्ष मानवता की सेवा की। उस समय के राजा ने इसके वित्तीय प्रबन्धन के लिए 100 गांवों से प्राप्त राजस्व को भी दिया करते थे। उसका पूरा राजस्व विश्वविद्यालय के लिए होता था। जैसा कि बताया गया है कि इस विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन, दर्शन शास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, धर्म, इतिहास एवं शांति प्रबन्धन, भाषा साहित्य और पर्यावरण जैसे विषयों के स्कूल होंगे। नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना पर लगभग 1005 करोड़ रुपये खर्च होंगे। प्रस्तावित नालंदा विश्वविद्यालय को चलाने के लिए दिल्ली में एक परियोजना कार्यालय बनाया गया है। विधेयक के संसद में पारित होते ही यह कार्यालय काम करने लगेगा। परियोजना के कार्यान्वयन के लिए आयोजक देश के रूप में भारत शुरुआती चरण में अधिक योगदान करेगा। योजना आयोग ने विशेष अनुदान के रूप में 50 करोड़ रुपये का आबंटन किया है। बाकी अन्य देश के सदस्य बिहार सरकार ने नालंदा के लिए इस विश्वविद्यालय के लिए लगभग 500 एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया है।

17.00 hrs.

जिस जगह भूमि का अधिग्रहण किया गया है, उस जगह ऐतिहासिक नालंदा विश्वविद्यालय था। आज भी वहां नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष मौजूद हैं और देखने लायक हैं। मैंने भी इसका अध्ययन किया है। प्रस्तावित नालंदा विश्वविद्यालय के लिए और 500 एकड़ भूमि का अधिग्रहण करना है। बिहार सरकार इसे कर रही है और इसके लिए मैं बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी को कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं। उनके अथक प्रयास से वर्ष 2007 में नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना के लिए सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास कराया और जल्द से जल्द किसानों को मनाकर भूमि अधिग्रहण करवाया। माननीय मुख्यमंत्री स्वयं नालंदा संसदीय क्षेत्र से लोकसभा का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और स्वयं नालंदावासी हैं। मुख्यमंत्री जी बौद्ध धर्म और दर्शन से विशेष रूप से प्रभावित हैं। इनकी बौद्ध धर्म और दर्शन में विशेष रुचि की वजह है क्योंकि वे मानते हैं कि इससे ही देश में मानवता का कल्याण हो सकता है। महात्मा बुद्ध का सत्य और अहिंसा का संदेश लेकर राष्ट्रपिता ने भारतवर्ष को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करवाया था। मुख्यमंत्री जी ने बौद्ध तीर्थ स्थान, बोध गया जहां महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, का आधुनिकीकरण करवाया है और सड़कों को नया रूप दिया है। खास तौर से 28 जून, 2007 को केंद्र सरकार ने नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. अमर्त्य सेन की अध्यक्षता में नालंदा परामर्शदाता समूह गठित किया था जिसे नालंदा विश्वविद्यालय पुनर्स्थापना को लेकर अपनी रिपोर्ट अगस्त 2010 तक देने को कहा था। प्रो. सेन और माननीय विदेश मंत्री श्री कृष्णा जी ने माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की है। नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के संबंध में जो भी किया, वे इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं। यहां सभी बौद्ध देशों के धर्म विहार और पूजा स्थल हैं। बिहार सरकार वहां सारी सुविधाएं उपलब्ध कराती हैं जहां महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति हुई थी। यहां महाबोधि मंदिर है, इसके लिए भी बिहार सरकार विशेष प्रबंध करती है। प्रस्तावित विश्वविद्यालय की परिसर एवं विद्यार्थीगण की सुरक्षा का जिम्मा भी बिहार सरकार ने लिया है।

मैं अपने संसदीय क्षेत्र के उन सभी किसानों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने 500 एकड़ भूमि दी है। मैं केंद्र सरकार से मांग करता हूं कि जिन किसानों की जमीन विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए अधिग्रहीत होगी, उनके बच्चों को इसमें पढ़ने के लिए विशेष रियायती व्यवस्था की जाए। इसके साथ मैं यह भी मांग करता हूं कि मेरे संसदीय क्षेत्र का कोई भी विद्यार्थी जो यहां पढ़ने की इच्छा व्यक्त करता है उसे विशेष छूट प्रदान की जाए या स्कालरशिप दी जाए। मेरा संसदीय क्षेत्र काफी पिछड़ा और अल्पसंख्यक इलाका रहा है। मेरी मांग है कि इस विश्वविद्यालय में जो भी दुकानें, मार्किट या कॉम्पलेक्स बनाए जाएं, वह निश्चित रूप से स्थानीय लोगों को दिए जाएं। नालंदा विश्वविद्यालय का इतिहास बहुत पुराना है। इसमें 10,000 छात्र और 2000 शिक्षक थे। पुस्तकालय में जितनी पुस्तकें थी वे सभी शिक्षकों द्वारा लिखी गई थी। यहां पर चीनी यात्री ह्वेनसांग आए थे और उन्होंने अपनी यात्रा के वृतांत में इस विश्वविद्यालय का जिक्र किया था। अभी भी नालंदा विश्वविद्यालय में ह्वेनसांग म्यूजियम है जहां प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के इतिहास को दोहराने संबंधी जानकारी है। यहां नालंदा विश्वविद्यालय का खंडहर और म्यूजियम भी है। लेकिन अभी भी राजगीर, घोड़ा, कटोरा, दामनखंधा इत्यादि कई ऐसी जगह हैं जहां प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के परिसर थे। इसके आसपास ताम्रपाषणिक काल के अवशेष मिले हैं। इसके उत्खनन की जरूरत है ताकि नालंदा विश्वविद्यालय के इतिहास को और दिखाया जा सके। मैं केंद्र सरकार से मांग करता हूं कि प्रोजेक्ट नालंदा बनवाकर प्राचीन नालंदा परिसर एवं उसके आसपास राजगीर, घोड़ा, कटोरा, दामनखंधा का उत्खनन कराया जाए ताकि हम प्राचीन नालंदा के इतिहास से परिचित हो सकें। नालंदा विश्वविद्यालय की खुदाई होने से इसके पूरे इतिहास एवं संस्कृति से सारा विश्व परिचित हो सकेगा। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को तुर्क सेनापति बख्तियार खिलजी ने ध्वस्त किया था तथा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को जला दिया था।

जिसके बारे में कहा जाता है कि छः महीने तक जलता रहा था। जो इस बात का प्रमाण था कि पुस्तकालय में कितनी अधिक किताबे थीं। कहा जाता है कि

पुस्तकालय नौं मंजिला था। जिस समय वह विश्वविद्यालय ध्वस्त हुआ था, तभी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की स्थापना हो रही थी। तब कैंब्रिज विश्वविद्यालय का जन्म भी नहीं हुआ था। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से नालंदा को पूर्वी और एशियाई के मुख्य शिक्षा केन्द्र के रूप में फिर से स्थापित किया जायेगा और इसे भारत के बौद्ध सर्किट से जोड़ा जायेगा। इससे पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन मिलेगा, चूंकि इसमें सारे विश्व से छात्र और अनुसंधानकर्ता आयेंगे।

बिहार के माननीय मुख्य मंत्री, श्री नीतीश कुमार जी ने यह भी कहा है कि जब तक विश्वविद्यालय के अधिकारियों की नियुक्ति नहीं होगी, तब तक राज्य सरकार के अधिकारियों को प्रतिनियुक्ति पर विश्वविद्यालय के काम के लिए भेजेंगे। विश्वविद्यालय के शासी निकाय में विदेश मंत्रालय, मानव संसाधन विकास विभाग के अलावा बिहार सरकार के प्रतिनिधि होंगे. यह जानकारी भी दी गई है।

मेरा एक सुझाव है कि इसमें स्थानीय स्तर पर सांसदों को भी रखा जाए। अंत में, मैं प्रो.गोपा सब्बरवाल, अध्यक्षा समाज विज्ञान विभाग, लेडी श्रीराम महाविद्यालय, नई दिल्ली को धन्यवाद देना चाहता हूं, क्योंकि उनके जैसे अनुभवी प्रोफेसर नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति होंगे। मैं आशा करता हूं कि प्रो.गोपा सब्बरवाल के निर्देशन में विश्वविद्यालय दिन दोगुना, रात चौगुनी तरक्की करेगा।

SK. SAIDUL HAQUE (BARDHMAN-DURGAPUR): Hon. Chairman, I thank you for giving me a chance to speak on this very important Bill – Nalanda University Bill. This Bill has been placed to implement the decision arrived at the Second East Asia Summit held in 2007 and the Fourth East Asia Summit held in 2009 for the establishment of the Nalanda University as an international institution for pursuit of intellectual, philosophical, historical and spiritual studies. The Government of India constituted Nalanda Mentor Group under the chairmanship of Nobel laureate, Prof. Amartya Sen, for revival of Nalanda as a Centre of Excellence.

Sir, I do support the Bill. We, the Indians, are proud of our long heritage in the field of education, culture, knowledge and wisdom. Ours is a great ancient civilisation. We did a lot for the development and advancement of human civilisation. Various tendencies have come into us. We have assimilated tendencies and on the basis of that, we have advanced. Let me tell the words of Rabindranath Tagore :

'*Sak, Hun, Dal, Mughal, Pathan – ek dehe holo lin*'

It means that Sak, Hun, Dal, Mughal and Pathan all came and became part of India. They all became Indians. He also said that India is *maha milaner sagar thirthga* which means that India is the pious ocean of great assimilation. It is this spirit of assimilation and religious tolerance that our land represented all over the world.

In the past, Nalanda did the same thing 800 years ago and for 800 years or more, Nalanda was – as described by Huen Tsang who came here in 7th Century – not only a temple of knowledge but also a temple of the highest pinnacle of tolerance. That religious tolerance is something that we have to imbibe today. So, in restarting the Nalanda University, we should look towards the future.

In India, there were other great universities also, like Vikramshila and Takshashila. Nalanda University was par excellence. It was the international symbol of India's eminence in the field of knowledge. Probably, it was the first ever large educational establishment. The college counted the great Buddha among its visitors and alumni. At its height, it had 10,000 students and 2,000 staff. It was said to have been an architectural masterpiece featuring ten temples, a nine-storeyed library - where monks used to copy books by hand - lakes, parks and students' accommodation. Its students were coming from Korea, Japan, China, Persia, Tibet and Turkey as well as from across the country.

Nagarjuna came here and was associated with it. Nagarjuna's concept of 'madhyamaka', the middle path, was very much part of Nalanda curriculum. It was not only the site of Buddhist studies but also of other fields like medicine, language, philosophy and science. Raja Ramanna, the nuclear physicist told that he was surprised to find the concept of quantum physics and relativity in a text of Nagarjuna. Even the Arabs, who are famous for discovering Arab numericals and for discovery zero, gave the Indians the credit of discovering it.

Such discoveries were made from a base like Nalanda. Today, this much celebrated centre of learning is in ruin.

The University was sacked in 1193 by Bakhtiyar Khilji, the Turkish General and he burnt down its library. This is a frightful episode in our history. Bakhtiyar Khilji destroyed Nalanda and burnt down its library, but he had not been able to destroy and burn down the very ethics of India that Nalanda stood for. Nobody will ever be able to destroy the great achievements

of Nalanda.

Now, it is a wise decision to revive this great centre of learning. The proposed University will have collaboration with other old Universities including Al-Azhar University of Egypt; Oxford and Cambridge Universities in Britain; and Harvard University in the USA. But, we must remember that Nalanda was not Oxford or Harvard at that time. Rather we should be proud to say that Oxford, Harvard, Cambridge are what Nalanda was at that time.

In the revival of the old site of learning, we have to remember that our task is not just to restore the past glory, but to put forward the glory of the future. Nalanda must actually represent the building of the glory of the future. Prof. Amartya Sen has observed that the aim of the University should be to contribute to the promotion of regional peace and vision by bringing together the future leaders of East Asia who by relating to their past can enhance their understanding of each other's perspectives.

Mr. Jeffrey Garten, the Professor of Yale School of Management, Yale University has rightly observed that : "A new Nalanda could set a benchmark for mixing nationalities and cultures for injecting energy into global subject â€¦ Today, it could be an institution devoted to global religious reconciliation." Further, this is what Vivekananda told in Chicago. He said : "Not to destroy someone's religion for the purpose of ones own religion, and every religion should bear the message of assimilation and not destruction." In my opinion Nalanda stood for this.

So, the idea behind a new University, near the site of Nalanda, should be to ensure three things. Firstly, it should be a quality centre of higher learning with emphasis on Buddhist learning, philosophy, science, literature and language, and environment studies.

Secondly, it should be a retrieval of roots, that is, a connection to the spirit of Indian learning, at least, symbolically, at almost the exact physical location of the ancient University. We must really see to it that the present architecture also reflects the ancient greatness, that is, the innovative architecture.

Thirdly, Nalanda of Yore was a global brand where scholars came from different nations. Given the collaborations with several nations, particularly, of East and South East Asia and interest groups with a stake in this ancient seat of learning, there is every opportunity for the new University to make itself a signature of the new India in a globalised world.

This new University will be a non-State, non-profit, secular and self-governing international institution. As such, I think that it would have been better if the name of the University became 'Nalanda International University'. I think that in the global arena, Nalanda will stand for humanism; for tolerance; for reason; for adventure of idea; and for the search of truth. Many great people came here, received knowledge and went back. They also brought some knowledge and, we received it. It means that good knowledge and good thoughts came to us from every side.

In the words of Ravindra Nath Tagore : "*Debe ar Nebe, Milabe Milibe*." It means that : "We shall give, we shall take, and we shall unite all." This is what Nalanda stood for in the past. Let this new Nalanda University play that role.

With these words, I conclude and support this Bill.

SHRI TATHAGATA SATPATHY (DHENKANAL): Thank you, Sir. At the outset, I support wholeheartedly this sincere effort of our Government, and all Indians will be proud that today for the first time the UPA-led Government has thought of doing something good for this country. ...(*Interruptions*)

I must congratulate the Minister that in spite of failure of the RTE and so many other confessions of sincerity falling, by the way on the way, in the progress of the country, the Nalanda University Bill is an extremely welcome step.

Sir, in the years gone by, India has seen many great thinkers like Sri Aurobindo, Vivekananda, who rose above religion, caste, creed and colour and could envision India as a country that was destined to lead this world in the world of spirituality. Sri Aurobindo had created a small example which he wanted to manifest on earth through the education system which is practised in Sri Aurobindo International Centre of Education at Puducherry where I had the good fortune of spending a few years.

Sir, Nalanda University was side by side operating along with other universities of great learning in this country. It was not limited to Shri Shahnawaz's Vikramshila or Takshashila alone, but what was known as Bihar and Orissa earlier, or I would put it Orissa and Bihar earlier, it used to be one whole complexity of humanity where learning was at its peak in this part of the world.

I am proud that we belong to a country which gave the very first universities to this world. When Nalanda, Takshashila and Vikramshila were operating in a certain part of the world, simultaneously, concurrently, there was also Pushpagiri about which Hiuen Tsang, Fa-Hien have written in their treatises that before Nalanda came into existence, historically it is a proven fact, Pushpagiri Vihara was the highest centre of learning in the whole world. People came from Greece, people came from Persia, from Indo-China, from China, and from very many places around the globe to study here, to teach here, to take back learning to their respective countries.

We know that when the Christ was crucified and when he was resurrected, the period in between, ensuing period, it is said that he came to East, he came to India. The Prophet, someone said, had mentioned once that the essence of wisdom he had derived in his life was from the East.

In this background, while supporting this Bill and trying to make my speech as short and definitive as possible, I would request this Government to look at our education as it is today. Since in the East Asia Summits of 2007 and 2009, so many other countries have reposed their faith on India that this is probably the only country where the base of higher education can be created, it is our solemn duty that we live up to this expectation of all our neighbouring countries. We all know we have terrible relationship with our neighbouring countries. The Minister must be congratulated for she has taken the right step that through education, through learning, we can create bonds, and we can make chords and tie chords with our neighbourhood which will go a long way in building a more peaceful, amicable and equitable Asia.

The Look East policy that was espoused by Mr. Atal Bihari Vajpayee is something that we all appreciate. While saying that we also know that the Mahayana Buddhism, the Vajrayana Tatva - which today is headed by the present Dalai Lama - was founded at Pushpagiri Vihara which is based in Orissa. If we are dealing with Nalanda, it is only proper that we consider Pushpagiri Vihara as a complex which should be a part of this centre of learning, this centre of excellence.

It is not only Yale or Cambridge or Harvard that we should look up to. Only the sons of millionaires go and study there. It is not necessary to make foreign universities have an easy game of India. We were the leaders in education, but we have lost our path. We have lost our moorings in the process of history. I must congratulate Madam Minister that she has in her own way found the moorings to bring this society back on its keel.

Only two religions existed in the subcontinent once and they were Sanatana Dharma - I am not saying Hindutva because that is a coloured and discriminatory word - and Jainism. Later on came Buddhism and Sikhism. But when these two religions, these two paths of life – they are not even religions but two paths of life – existed in this subcontinent, it was a process of learning that created the Gurus. It was not a blind faith in customs and in mere rituals.

Everybody here knows that the maritime activities that were emanating from the then Kalinga, which is part of Orissa now, spread the Indian thoughts of Jainism and later on Buddhism to the Far East and even as far as Arabia. This I would like to say was a period when other parts of India were in the darkness, were uneducated - I am not denigrating anybody – and in some ways were underdeveloped. At that time, the area that is Bihar and Orissa now gave light to the human mind.

I would go back to Huen Tsang's treatises and would request this Government – I will not beg like we heard yesterday somebody was begging – and say that taking a leaf out of Sri Aurobindo's and Vivekananda's teachings, and what Huen Tsang had said in his treatises, let us create a complex of higher education where you get Pushpagiri Vihara and Nalanda together and create a centre of excellence, a centre of learning where our students, the future generations not only of India but also of Myanmar known as Burma, of Thailand, Cambodia, Vietnam, China, Pakistan and Afghanistan, should feel attracted to come here, they should feel attracted to study here, to learn facts of life, to learn things of spiritual excellence, thoughts not only of materialism but also thoughts which are much greater than what we encounter today on the streets.

So, I would only request that this should be considered seriously. I support this Bill wholeheartedly, which is a rare thing for me; and our Party, the Biju Janata Dal, also supports this Bill. We only want that it should be built into a Complex and Pushpagiri Vihar should also be made into a Complex along with Shahnawaz Hussain ji's Taksha Shila, and of course, Nalanda....(*Interruptions*) I would suggest that this should be taken very seriously and we should go ahead with this.

SHRI S. SEMMALAI (SALEM): Thank you for giving me this opportunity to speak on The Nalanda University Bill, 2010. Nalanda University is a prestigious institution adding glory and fame not only to Bihar but also to our nation. This is a crowning glory to our educational system. At the outset, I support the Bill.

Nalanda Mentor Group head, Shri Amartya Sen has recently stated that it would take some more time for the university to take shape. He is having a doubt in his mind about the financial constraints. The total cost for the establishment of the university will be in the range of Rs.1,000 to Rs.1,500 crore but the Planning Commission has sanctioned initially Rs.50 crore towards the endowment fund. I am sure that the Centre and the State would contribute their might to fulfil the dream. I am of the opinion that finance should not be a constraint to achieve our ambitions.

Nalanda University is perceived as a symbol of Asian cooperation – a decision taken at the East Asian Summits in 2007 and 2009. I am of the opinion that it would be better to expand the composition of the Governing Body of the university with the inclusion of members from other East Asian countries also to lend the university as a university for the whole of East Asia. There is no representation from the HRD Department in the Governing Body. The Governing Body should also be expanded with more members. Hence, I request the hon. Minister to give serious thought on it.

On reading of the Bill, I find that in Clause 12 Visitor of the proposed University has been clothed with enormous power. I am asking the hon. Minister this. Will it not erode the autonomy of the University? In Clause 9, it is stated that the University shall be autonomous and accountable to the governing body but through Clause 12 overriding powers have been given to the Visitor. It is stated in Clause 12 that the Visitor may, after obtaining the views of the Governing Body, takes such action and issue such direction, and University shall be bound to comply with the directions. Governing Board shall be bound to comply with such directions of the Visitor. I would request the hon. Minister to examine the feasibility of clipping the powers of the Visitor or Nominee in running the University. So, this Clause may be suitably amended.

Finally, I fully support and welcome this Bill, which should pave the way for international understanding and peace; and it would prove to be a landmark one in South Asia and even globally, in the days to come.

With these words, I conclude.

श्री जगदानंद सिंह (बक्सर): सभापति महोदय, मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया है। मैं बिहार से आता हूं, नालंदा का क्या महत्व है, हम सभी जानते है यह देश और दुनिया के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान प्राचीन काल से है, जिसके पुनरूद्धार की बात आज इस सदन में की जा रही है। मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं कि प्राचीन भारत के सबसे बड़े ज्ञान स्थल को फिर से पुर्नजीवित करने के लिए इस सदन में बिल आया है। इसमें अवश्य थोड़ी सी परेशानी है कि एक अंतरराष्ट्रीय इनिशिएटिव के तहत यह कार्य हो रहा है। आजाद भारत के 63वें वर्ष में अंतरराष्ट्रीय इनिशिएटिव पर यह कार्य होने जा रहा है, जब कि यह केन्द्र की सरकार के द्वारा बहुत पहले ही होना चाहिए था। सन् 2007 और 2009 की दूसरी और चौथी पूर्वी एशिया शिखर बैठक के निर्णय के कार्यान्वयन के लिए यह बिल सदन में पेश किया गया है।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि 770 वर्ष, पांचवी शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक यह विश्वविद्यालय भारत के प्रमुख ज्ञान का केन्द्र रहा। जब 1197 में यह समाप्त कर दिया गया, दुख है कि 812 वर्ष, बाद अर्थात आठ शताब्दी बीत गई, फिर से इसके पुनरूद्धार की बात तय करने में इतना वक्त बीत गया। हम सब खुशनसीब हैं कि जिस नालंदा विश्वविद्यालय की चर्चा हम सब आज तक अपने जीवन में सुनते आ रहे हैं, वह अपने स्वरूप में हम सब के सामने आएगा। हमारे शिक्षा मंत्री जी हैं, संयोग से बिहार में नालंदा खुला विश्वविद्यालय भी है, जो वहां के आम लोगों को शिक्षा का एक अवसर प्रदान करता है। इस अंतरराष्ट्रीय संस्थान ने प्राचीन भारत में दुनिया को संदेश दिया, जहां दुनिया के हर कोने से विद्यार्थी बन कर, जिज्ञासी लोग नालंदा में आते रहे हैं। आज फिर से दुनिया की चाहत उसी स्थान पर है, जहां प्राचीन काल में दुनिया के लोग आते थे, फिर से दुनिया के सभी देशों को वहां आने का अवसर मिले। उन लोगों को विश्वास है कि भारत का बिहार राज्य का यह स्थान जो ज्ञान का स्थल रहा है, यह फिर से वर्तमान में ज्ञान का स्थल बन सकता है।

सभापति महोदय, मैं इसकी कोई चर्चा नहीं करना चाहता हूं कि बिहार की वर्तमान सरकार ने इसमें पांच सौ एकड़ जमीन एक्वायर करके दी है, पांच सौ एकड़ जमीन और भी लगेगी और हजार-करोड़ रुपए से अधिक खर्च आएगा। एक सामान्य बात मेरे जैसे व्यक्ति के दिमाग में आती है कि यदि हजार-करोड़ के व्यय में नालंदा विश्वविद्यालय का गौरव वापस किया जा सकता है तो क्या भारत सरकार के लिए दुनिया के सामने आवश्यक है कि वह सहयोग के लिए लोगों से कहे या दुनिया के लोगों को सहयोग के लिए आना पड़े।

सभापति महोदय, हमारे महान कवि ने कहा है कि जहां की पुस्तकों को जला दिया जाए तो समझो कि वहां की आबादी को जला दिया गया। आज संयोग से बिहार शिक्षा में इस देश का सबसे पिछड़ा राज्य है। वहां पर सबसे निरक्षर लोग रहते हैं।

यदि 12वीं शताब्दी में यह घटना नहीं घटी होती तो बिहार इस देश के नक्शे पर इतने नीचे पायदान पर नहीं होता। उस समय इस ज्ञान के केन्द्र को समाप्त करना ही बिहार का आज का जो स्वरूप है, उसका कारण बन गया। लेकिन मुझे खुशी है कि अपने स्वरूप में बिहार अब धीरे-धीरे खड़ा हो रहा है।

मैं कोई राजनैतिक बात नहीं करना चाहता हूं, हमारे शाहनवाज़ साहब जो कह रहे थे, मैं उसका जवाब भी नहीं देना चाहता हूं, लेकिन जब इस विश्वविद्यालय का वर्तमान खड़ा होने जा रहा है तो संयोग से शाहनवाज़ जी के लोगों के जाने की बारी आ गई है। मैं इसलिए इस बात को कहना चाहता हूं कि तीन महीने से सारे विश्वविद्यालय वहां बन्द थे, हम वहां पर इस विश्वविद्यालय को स्थापित करने जा रहे हैं, हम प्राचीन गौरव को वापस करने जा रहे हैं, बिहार की सारी शिक्षा व्यवस्था

को सुधारने की इससे हमें वहां एक ताकत मिलेगी, हमें हमारा लक्ष्य मिलेगा और बिहार आगे बढ़ेगा।

इस विश्वविद्यालय के माध्यम से देश ही नहीं, दुनिया में भी धर्म, व्याकरण और अध्यात्म की बातें ही नहीं जाएंगी, बल्कि बिहार भी अपना गौरव वापस करेगा। इसलिए मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि इस बिल को लाकर यू.पी.ए.-2 ने एक बड़ा काम किया है। बिहार को आगे ले जाने में, शिक्षा के क्षेत्र में यह मील का पत्थर साबित होगा।

इसी के साथ मैं बिल का समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

SHRI NARAHARI MAHATO (PURULIA): I am highly thankful to you for having given me a chance to speak on the Nalanda (University) Bill. I will not discuss it vividly but in brief.

A number of hon. Members have participated in this discussion. I would say that it is a prestigious Bill. In ancient times the Nalanda University had brought glory and fame to our country. If one looks at the educational system of the ancient India, one would be amazed to see the infrastructure of the Nalanda University. Not only Indian students but students from abroad used to come to Nalanda University for getting education. We know that education is the manifestation of the perfection already in man. Keeping this in mind the Nalanda University was born. The primary object of the Institution was to make the Nalanda University one of the national importance institutions. It is hereby declared that the Nalanda University is known as an institution of national importance.

In this century if we wish to develop our education system or educational infrastructure, we must revisit the ancient education system of Nalanda University and I am sure we will be able to step forward our present education system. We all know that Nalanda University was a prestigious institution which brought glory and fame to our nation. Today, when this Bill is being discussed, I hope that all matters relating to education and educational infrastructure are looked into. I am of the opinion that for an educational institution giving finance alone is not enough but proper thought and reasoning must be given towards it to make it a great institution.

My humble suggestion would be that its Governing Body should be expanded. The institution was very famous in ancient India.

Sir, I do not want to discuss it vividly. I welcome this Bill which is being discussed today on the floor of the Lok Sabha wholeheartedly. Many hon. Members have discussed this Bill. My humble submission to the hon. Minister would be to establish this prestigious institution in near future and inculcate into it our ancient and ancestral prestige.

With these words, I conclude my speech.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति जी, जो आलोच्य विषय है, नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010, मैं उसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं सर्वप्रथम केंद्र सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं और वह हमारे शुक्रगुजार की हकदार है।

सभापति महोदय, जब राजा जनक ने याज्ञवल्क्य से पूछा कि महर्षि हम दुनिया को कैसे देखते हैं? याज्ञवल्क्य ने कहा कि जनक, हम दुनिया को सूरज की रोशनी से देखते हैं। फिर जनक ने पूछा कि महर्षि अगर सूरज नहीं होगा, तब कैसे देखेंगे? याज्ञवल्क्य ने कहा कि जनक, तब हम चांद की रोशनी से देखेंगे। फिर उन्होंने कहा कि यदि चांद भी नहीं हो, तब कैसे देखेंगे? उन्होंने कहा कि अंधेरे में जब हम एक-दूसरे को पुकारेंगे, तो दोनों की आवाज एक-दूसरे से मिलेगी, इस तरह से हम देखेंगे। उसने पूछा कि यह स्थिति भी नहीं हो, तब कैसे देखेंगे? याज्ञवल्क्य ने कहा जनक, तब हम आत्मा के दीप को जलायेंगे। नालंदा विश्वविद्यालय कोई शरीर नहीं है। उसके साथ कोई स्थानीय पृष्ठभूमि नहीं है। वह सांस्कृतिक चेतना का आत्मदीप, संस्कृति और संस्कार है, जब हिमालय का पहाड़ बनता है, तब संस्कृति बनती है।

सभापति महोदय, बिहार सरकार ने जब विकास के कदम उठाए, तो उसने कहा कि केवल आर्थिक विकास होंगे, तो लंका बनेगी, आर्थिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक विकास होंगे, तो अयोध्या बनेगी। इसीलिए राज्य सरकार ने आर्थिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक विकास के कदम उठाए। किसी ने ठीक कहा है कि विगत नहीं मरता है, the past is never dead. उससे वर्तमान का फल निकलता है और वह भविष्य का बीज होता है। मैं कहना चाहता हूं कि नालंदा विश्वविद्यालय की किसी राज्य सरकार ने स्थापना नहीं की थी। नालंदा विश्वविद्यालय सामाजिक चेतना का फल था, नालंदा विश्वविद्यालय सामाजिक प्रबंधन का फल था। यह किस तरह से चला करता था? सभापति महोदय, जब ह्वेनसांग नालंदा विश्वविद्यालय में पहुंचा तो एक दरबान जो वहां दरवाजे पर खड़ा था, उसने उसे रोका। ह्वेनसांग से उस दरबान ने कहा कि आपको अंदर जाने से पहले मेरे प्रश्नों का जवाब देना होगा। ह्वेनसांग ने कहा, पूछो। दरबान ने उससे प्रश्न पूछा और उसने जवाब दिया। ह्वेनसांग कहता है कि अरे, तुझे तो वाइस चांसलर होना चाहिए।

तू दरबान बना हुआ है। उसने कहा I have knowledge but I have no meditation. मुझे नॉलेज है पर मेडिटेशन नहीं है। जो वाइस चांसलर होगा, उसे

नॉलेज के साथ-साथ मेडिटेशन भी होना पड़ेगा। मैं नॉलेज रखता हूं, मेडिटेशन नहीं। मैं इन बातों को आपके सामने इसलिए रखना चाहता हूं कि आज विज्ञान में प्रगति हुई है, तकनीकी में प्रगति हुई है, दिमाग ने आसमान को स्पर्श किया है, पर हृदय के क्षेत्र में हम बहुत पीछे पड़ गए हैं। आज हम जो पढ़ते हैं, उस जमाने में उसके विपरीत कि हम क्या हैं, मनुष्य क्या है, हम कहां से आए हैं, इसका अध्ययन होता था। आत्मा को जानने के लिए आत्म को जानना जरूरी है। बिना आत्म को जाने हुए आत्मा को नहीं जाना जा सकता। बिना आत्मा को जाने हुए परमात्मा को नहीं जाना जा सकता। इस संबंध में नालंदा विश्वविद्यालय ने एक बड़ा ही ऐतिहासिक कदम उठाया था।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि नालंदा विश्वविद्यालय में हजरत मूसा ज्ञान प्राप्त करने के लिए आए। कहा जाता है कि हजरत मूसा के साथ-साथ क्राइस्ट भी आए। दुनिया की सारी सामाजिक, सांस्कृतिक भाषा इस विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाती थी। आज बड़ा अंधेरा है, घुप अंधेरा है, हाथ को हाथ नहीं सूझता। हम बड़ी ऊंचाई पर हैं, लेकिन हार्दिक क्षेत्र में बहुत पीछे पड़ते जा रहे हैं। इसलिए नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना से भ्रातृत्व की भावना फैलेगी। नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना से हम दुनिया के देशों की परम्पराओं को जान सकेंगे, दुनिया के देशों की अंतर्कथा जान सकेंगे।...(व्यवधान) हम दुनिया की भाषाओं को जान सकेंगे। सभापति महोदय, इसलिए हम आपके माध्यम से केन्द्र सरकार को धन्यवाद देना चाहते हैं। न केवल नालंदा विश्वविद्यालय बल्कि तक्षशिला और विक्रमशिला ये हमारे सारी लाइट हैं। इन सबको हमें प्रज्ज्वलित करना है ताकि हमारा वर्तमान सुखद हो सके।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं केन्द्र सरकार को इसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।

श्री मोहम्मद असरारुल हक़ (किशनगंज): सभापति महोदय, आपने मुझे नालंदा यूनीवर्सिटी बिल, 2010 पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं इस बिल की ताईद में खड़ा हुआ हूं और इसके लिए सबसे पहले दिल की गहराई से यूपीए सरकार को मुबारकबाद पेश करता हूं। वैदिक दौर से लेकर आधुनिक दौर तक का हिन्दुस्तानी इतिहास यह बताता है कि सियासी, सामाजी, मजहबी, अदबी और तहजीबी व सकाफ्ती मैदानों में रियासत-ए-बिहार का मुकाम बहुत अहम रहा है। प्राचीन भारत की तारीखी अहमियत का तीन-चौथाई हिस्सा बिहार की तारीख से ही जुड़ा हुआ माना जा सकता है। बिहार महात्मा गौतम बुद्ध, महावीर, शर्फुद्दीन, यहैया, मुनेरी और गुरु गोबिंद सिंह जी जैसे अहिंसा, कुर्बानी, बलिदान, रूहानियत, देश प्रेम और आला अमल व किरदार के आलम बरदारों की सरज़मीं है। यह स्टेट संतों, सूफियों, आलिमों और ज्ञानों का केन्द्र रहा है। प्राचीन काल में इसने भारतीय जनता को एकता के सूत्र में बांधा, पंवशील के सिद्धान्तों को आम किया और उसे लोगों में फैलाया। मध्य काल में सूफी और संतों के जरिए शान्ति और नैतिकता का जबरदस्त प्रचार किया गया। बिहार शिक्षा, कला, मजहब-ओ-रूहानियत की धरती रही है। जहां नालंदा, विक्रमशिला और वोदन्तपुरी की यूनिवर्सिटीज़ में विज्ञान, दर्शन, भाषा शास्त्र, समाज शास्त्र, साहित्य, आयुर्वेद, तंत्र और कई दूसरे विषयों की तालीम के लिए हिन्दुस्तान के दूसरे प्रान्तों और विश्व के दूसरे देशों से शिक्षा और इल्म के प्यासे अपनी इल्म की प्यास बुझाने आते थे। नालंदा का मतलब ही इल्म और शिक्षा देने वाला है।

427 ईसवी से 1197 ईसवी के दौरान यह यूनीवर्सिटी बुद्धिस्ट तालीम का मरकज़ रही है। मौरियन सम्राट अशोका ने अगर इसकी तामीर में हिस्सा लिया, तो गुप्ता काल में उसे उस वक्त के राजा की सरपरस्ती हासिल रही। नालंदा को तारीख की सबसे बड़ी यूनीवर्सिटी में से एक यूनीवर्सिटी होने का दर्जा हासिल था।

महोदय, आज जबकि सदन में नालंदा यूनीवर्सिटी बिल, 2010 पर बहस हो रही है, तो मैं इसकी भरपूर ताईद करता हूं। हमें विश्वास हो चला है कि रियासत-ए-बिहार इस यूनीवर्सिटी के कयाम के जरिये पुरानी तारीखी रिवायतों को फिर से पनपता हुआ देखेगी और दुनिया के सबसे पुराने शिक्षा केन्द्र से, जहां कभी चीन, यूनान, पर्शिया, कोरिया, श्रीलंका और इंडोनेशिया से आये दस-दस हजार तलबा लगभग दो हजार ज्ञानियों से शिक्षा पाते थे, फिर वही तारीख दोहरायी जायेगी।

महोदय, पांचवीं सदी मे कायम करदा नालंदा यूनीवर्सिटी के खंडहर आज भी उसके अतीत के अमली दास्तान और कुशान तर्जे-तामीर की झलक पेश करते हैं। आज जिस नालंदा यूनीवर्सिटी बिल पर बहस हो रही है, उसके बुनियादी मकासिद ये हैं –

1. मैम्बर मुमालिक में कदीम उलूम बिलखसूस वो उलूम जिनका रिवाज सदियों पहले नालंदा में था, जैसे फलसफां, लिसानियत, तारीख और हायर एजुकेशन के

उन मजामीन के सिलसिले में तहकीक की कुवत पैदा करना है, जो म्यारे जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए अजहद जरूरी है।

2. ईस्ट एशिया के मुस्तकबल के उन रहनुमाओं को इकट्ठा करके, जिनकी माज़ी की तारीख एक- दूसरे की मसाइल और उनके मुख्तलिफ पहलुओं को समझने से मुत्तालिक हैं, उन्हें एक जगह लाकर इलाकायी अमन व सकून को बढ़ावा देना है।

3. तालीम और निसाव-ए-तालीम में उन मेयारात को लाना, जो तमाम मैम्बर मुमालिक को काबिले- कबूल हों, ताकि तालीमी-ए-मियार में हम अहंगी लाई जा सकें। इसकालसर और मैम्बर मुमालिक की माबैन एक मुनफरिद साझेदारी का माहौल पैदा करना। गौतम बुद्ध की तालीमात को मौजूदा दौर में उन दूसरे अफकार को खारिज किये बगैर समझना, जो दुनिया के किसी हिस्से में भी मौजूद हों। एशियाई मुल्कों के बीच खुसुसन जुनुबी मशरकी एशियाई मुमालिक के बीच जो मजबूत तारीखी मुमासलत, तिजारत, साइंस, रियाज़ी, मजहब, फलसफां और सकाफती हम आहंगी है, उन पर रिसर्च और तहकीकात को बढ़ावा देना। तलबा के दरम्यान एक-दूसरे को समझने और उन्हें बर्दाश्त करने की कुवत पैदा करना ताकि उन्हें मयारी शहरी बनाया जा सके और बेहतरीन जम्हूरी समाज की तशकील की जा सके। सदियों पहले राईज नालंदा की तालीम के तनाजूर में मैम्बर मुमालिक की तालीम के तनाज़ुर को बेहतर बनाना और मैम्बर मुमालिक के माबेन मुख्तलिफ उलूम-ओ-फनून और पेशा वराना सलाहयतों की तरबियत फरहम करना।

महोदय, नालंदा यूनीवर्सिटी के लिए बिहार सरकार ने जमीन फराहम की। वह शुक्रिया की मुस्तहिक हैं और इसी तरह हम अपनी यूपीए सरकार को दिल की गहराइयों से मुबारकबादी देते हैं और शुक्रिया अदा करते हैं कि उन्होंने उस अजीम यूनीवर्सिटी की तामीर के लिए, उसे बनाने के लिए दिल खोलकर फण्ड फराहम किया।

महोदय, चूंकि मैं इस सदन में किशनगंज की नुमाइंदगी करता हूं, इसलिए इस मौके पर इस मामले का जिक्र करना भी जरूरी समझता हूं कि तालीम-ए-लिहाज से बिहार की सबसे ज्यादा पसमांदा कमिश्नरी पूर्णिया है। वहां सभी फिरकों में तालीम की शरह बहुत ही कम है। उस कमिश्नरी के किशनगंज में एएमयू के स्पेशल सैंटर के कयाम के लिए वहां के सभी मजहबों और तबकों के अवाम रियासती सरकार की तरफ निगाहें उठाये हुए हैं। अगर रियासती सरकार उस स्पेशल सैंटर के लिए चंद टुकड़ों में दी गयी जमीन को एकजा करके उसे एएमयू को जल्द फरहाम कर दे, तो मुझे उम्मीद है कि उस इदारे के कयाम से भी बिहार तालिमी फिलड मौ अपना अहदसाज रिकार्ड बनायेगा।

महोदय, तालिम के फरोग़ में यूपीए सरकार दिलचस्पी दिलकशीं का मुज़ाहरा कर रही है, इसलिए मैं यूपीए सरकार की लीडरशिप की खिदमत में एक शेर नज़र करके अपनी बात पूरी करता हूं - " कोई बज्म हो कि कोई अंजुमन, ये शेआर अपना कदीम है, जहां रोशनी की कमी मिली, वहां एक चिराग जला दिया।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदय, नालंदा विश्वविद्यालय को देखने से मालूम होता है कि कबीर दास जी कहा करते थे - अचरज देखा भारी साधू, अचरज देखा भारी। विश्वविद्यालय के लिए राज्य सरकार ने एक कानून बनाया नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2007 और अब दूसरा कानून आ गया नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 भारत सरकार के द्वारा, विदेश विभाग के द्वारा। अब ये दो विश्वविद्यालय हैं या एक ही विश्वविद्यालय है, कौन सा कानून चलेगा इस पर? एक विश्वविद्यालय एक होगा और कानून दो होंगे या राज्य सरकार वाला कानून खत्म हो गया और अब यह कानून रहेगा? यह मेरा सवाल है। इसमें लिखा है कि प्रस्ताव विधान यह उपबंधित करता है कि भारत के राष्ट्रपति आदेश द्वारा किसी व्यक्ति को कुलाध्यक्ष नामनिर्दिष्ट कर सकेंगे। फिर कहा गया है कि बिहार के विधानमंडल द्वारा अधिनियमित किए गए नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2007 के उपबंधों के अधीन नियुक्त नालंदा विश्वविद्यालय का कुलाध्यक्ष राष्ट्रपति के नामनिर्देशित के रूप में नियुक्त किया समझा जाएगा। फिर आगे लिखा गया है कि उक्त नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2007 के उपबंधों के अधीन नियुक्त नालंदा विश्वविद्यालय का कुलाधिपति प्रस्तावित विधान के अधीन कुलाधिपति के रूप में नियुक्त किया गया समझा जाएगा और प्रस्तावित विधान के प्रारंभ की तारीख से तीन वर्ष की अवधि तक पदधारण करेगा। इसमें बड़ा कंफ्यूजन है। पांच वर्ष का कार्यकाल उस कानून में है और तीन वर्ष का कार्यकाल इस कानून में है। यह अलग-अलग है। राज्य सरकार बहाल कर दे, वह भी रहेगा, जो राष्ट्रपति बहाल करेंगे, वह भी रहेगा। यह कैसा कानून है? इसलिए मैं इस पर स्पष्टीकरण चाहता हूं। यह बात साफ होनी चाहिए कि यूनिवर्सिटी एक और कानून दो? राज्य सरकार का कानून अलग और भारत सरकार का कानून अलग। पांच वर्ष से मैं सुन रहा हूँ। इसका इतिहास बहुत पुराना है। जब ह्वेनसांग आए थे, नालंदा विश्वविद्यालय में वाइस-चांसलर नियुक्त हुए थे। यह उस समय की दृष्टि थी कि एक चाइनीज यात्री, जो यहां बुद्ध धर्म का अध्ययन करने आये थे, वहां वाइस चांसलर नियुक्त हो गए। शीलभद्र चांसलर थे और ह्वेनसांग वहां वाइस-चांसलर थे। अब यह स्पष्ट नहीं है कि वाइस-चांसलर राज्य सरकार नियुक्त करेगी या भारत सरकार नियुक्त करेगी?

इसमें लिखा है कि पीपी मॉडल से होगा। माननीय शिक्षा मंत्री कह रहे हैं कि मॉडल स्कूल भी हम पीपी से करेंगे, कितने वर्ष इसमें लग गए? ऐसे ही नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में पांच वर्ष से सुन रहे हैं। बिहार के मुख्यमंत्री 20 बार कलाम साहब को प्रोफेसर बहाल कर चुके हैं। 20 बार अखबार में छपा कि कलाम साहब एशोशिएट प्रोफेसर हो गए। हम लोग आजिज हैं कि यह यूनिवर्सिटी कब शुरू होगी। इसमें 1050 करोड़ रूपए खर्च होने हैं, 50 करोड़ रूपए योजना आयोग ने तय किया है। अब पीपी मॉडल दुनिया भर में खोजा जाएगा। इसमें दलाईलामा साहब को शामिल नहीं किया कि चीन का भी सहयोग लेना है। चीन का सहयोग चाहिए तो दलाईलामा, जो धर्म गुरू हैं, उनको कैसे जोड़ा जाएगा। कह रहे हैं कि हम बुद्ध धर्म पढ़ाएंगे, वहां जो धर्मरक्ष, महाबोधकल्याण, अनिरूद्ध, मंजूश्री, महाकस्सप आदि सभी जो बौद्ध अनुयायी थे, महायान, हीनयान संप्रदाय, आचार्य विमलकीर्ति, कुमारजीव - जो जम्मू-कश्मीर के राजकुमार थे जिन्होंने चीन की राजकुमारी से शादी की थी, आचार्य विमलकीर्ति की रचना का आठ बार चीन में अनुवाद हुआ, जापान में अनुवाद हुआ, विमलकीर्तिनिर्देश को पढ़कर जापान के राजा ने उसे राजधर्म घोषित कर दिया। यह सब चीजें भी हैं। सवाल इस बात का है कि किस बात का वहां अध्ययन होगा, कब से होगा। पांच वर्ष तो बीत चुके हैं।

18.00 hrs.

अब पीपीपी माडल के तहत यह किया जाएगा, तो मैं कहना चाहता हूं कि आपने माडल स्कूल्स को भी पीपीपी योजना के तहत खोलने की बात कही है, लेकिन वह अभी तक पूरी नहीं हुई है। यह तो एक युनिवर्सिटी है और इसमें अन्य देशों की भी भागीदारी होगी, तो इसमें पीपीपी माडल लागू करेंगे तो पता नहीं यह नालन्दा विश्वविद्यालय कब खुलेगा। नालन्दा युनिवर्सिटी के मेंटल ग्रुप में अमर्त्य सेन जी भी हैं। उन्होंने भी कहा है कि नालन्दा विश्वविद्यालय को पुनः खोलने में समय लगेगा। यह मैं नहीं कह रहा हूं, अमर्त्य सेन जी ने कहा है। इसलिए हमें भी आशंका है, क्योंकि पीपीपी माडल में समय लगता है। जब माडल स्कूल्स उसके तहत अभी तक नहीं खुल सके हैं तो इधर तो आपको युनिवर्सिटी बनानी है। इसलिए हम चाहते हैं कि समय पर इसका स्पष्टीकरण हो। एक युनिवर्सिटी और दो कानून, राज्य सरकार का अलग और केन्द्र सरकार का अलग, इसके भी स्पष्ट किया जाए।

MR. CHAIRMAN : Hon. Minister for Parliamentary Affairs wants to say something.

...(*Interruptions*)

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF WATER RESOURCES (SHRI PAWAN KUMAR BANSAL): Hon. Members representing various parties at the B.A.C. yesterday were good enough to agree to my request that if we were to take up the discussion in the morning, as we did today, we would sit late and conclude two Bills today. The one Bill which is being taken up and this I hope would be concluded in the next few minutes only, and thereafter the next Bill, viz., Educational Tribunals Bill may also be taken up. Then, we can take up `Zero Hour' matters.

MR.CHAIRMAN: What is the sense of the House?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes, Sir.

MR. CHAIRMAN: So, the House has agreed.

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

MR. CHAIRMAN: Shri Prasanta Kumar Majumdar. Please conclude within two minutes.

...(*Interruptions*)

(Dr. Raghuvansh Prasad Singh *in the Chair*)

*SHRI PRASANTA KUMAR MAJUMDAR (BALURGHAT) : The most ancient university of the world is the university of Nalanda which was set up in the 5th century A.D. All the emperors of that era like the Maurya emperors, Gupta emperors or the Pal emperors gave patronage to this institution. On a land of 14 acres, the university was built with 10,000 students and 2000 teachers coming under one roof. They used to stay together and learn. Not only that, the major attraction of the institution was its library. It was a nine-storey building comprising of scores of books and manuscripts. The library was known as a treasury of truth. The architecture of the building was also a masterpiece. The curricula were so vivid that all aspects of learning were covered, all disciplines were taught. Starting from ancient science, medicine, logic, metaphysics, philosophy, yoga, Buddhism, foreign philosophy, austerity – everything was dealt with. Shilabhadra, Atish Dipankar were the acharyas of the university. They were well-known for their in-depth knowledge and far-reaching vision.

So such was the quality and stature of the university which was situated in Bihar. But today what is the educational scenario of this state? It is in a pitiable situation. There has been absolutely no development and Bihar is lagging far behind in knowledge and education. The Government of India and the State Government should have paid more attention to this aspect. Not only that, the East-Asia Summit Conference has proposed that the teaching of Buddhism should be strengthened through international research. If that becomes possible then Buddhism will spread in the entire Himalayan region, Tibet, Bhutan. Moreover, Gautam Buuddha used to stay in this region. Therefore Buddhism as well as

---

* English translation of the Speech originally delivered in Bengali.

Jainism were discussed at length. There were exchange of ideas and opinions. Various subjects used to be taken up for in-depth analysis. Scholars from all over the world – from Tibet, China, Philippines, Malaysia and other parts of East Asia used

to pour in to study in this university. It was an international residential university. Infact the first of its kind. Therefore it has a rich tradition. The Government should have revived it many years ago to make it regain its past glory. Bihar could also have progressed shedding its backward tag. It is very unfortunate that neither the Central Government nor the State Government ever thought of promoting our heritage and culture. The Turkish emperors had tried their best to vanquish our rich, prosperous heritage but failed every time, they could not destroy the cultural fabric of our country. It is still shining bright. So it is time we do something about our tradition.

This Bill is non-payment, non-profit, private partnership, autonomous and accountability Bill. I whole-heartedly support the Nalanda University Bill 2010 and also emphasize that the views of Hon. MP of the area should be considered seriously. In the end I congratulate the Central Government along with the State Government for coming out of deep slumber after such a long time and introducing this important Bill in this august House. With the words, I thank you for allowing me to speak and conclude.

DR. TARUN MANDAL (JAYNAGAR): Mr. Chairman, Sir, I welcome this Bill. This Bill will help increase the number of universities in our country and particularly when it is established in the name of Nalanda, it will help us to have an introspection about our past glory and rich heritage. This university should help the present day generation to develop democratic spirit and secular and scientific fabric advocated by our nation builders and great educationists of this country who thought that every seat of education should be for making a person a complete human being and it should help him to build good character in human beings. Every university should make students as comprehensive men when they come out of the university and not sectarian men.

In this connection, I would like to draw the attention of the hon. Minister towards Clause 24 of this Bill where there is a provision for introduction of Business Management in relation to Public Policy and Development Studies. I believe that this goes against the very objective as declared and it should not be a part of this university's education system.

Secondly, in Clause 33 of this Bill, regarding service conditions of employees of the university it has been stated that they would be appointed on the basis of a written contract. I suggest that all employees should be made permanent. Then, there is a provision regarding arbitration for any problems of professors and other employees of the university. There is a tribunal proposed for that and there is no scope for anybody to go to court. I suggest that they should be allowed to go to court. If students and teachers want to lodge any complaint against the management, there is no scope for that. So, they should also have scope to go to court.

Then, PPP will be a hindrance to the cause of this university. As one of our great parliamentarians and later Vice President of India Dr. Sarvapalli Radhakrishnan once said, our universities and institutions should be a seat of free thinking and sovereign ideology. To achieve this, PPP would be a hindrance for the students to come into this university.

Further, the Governing Body and the Academic Council should always be elected and nominated members should be very less so that the democratic structure of our education system remains. With these words, I support this Bill.

SHRI PREM DAS RAI (SIKKIM): Mr. Chairman Sir, thank you for allowing me to participate in this very important debate. The Nalanda University Bill 2010 is, in my opinion, an extremely important step as India is a rising power and as we flex our soft power, I think, this falls within the ambit of our soft power. This would have been not possible maybe 10-15 years ago but that it has happened in the year 2010 augurs well for our country and for the people at large.

My Party, the Sikkim Democratic Party, welcomes this as a very interesting and a very good development for our country and for our people. The people of Sikkim would like to thank not only the Government of India but also the people of Bihar for this great step forward. The people of Sikkim and mainly the Buddhists of Sikkim will find it a very useful mechanism for further studies.

In this context, I would like to draw the attention of this House to two very important visits made by our Prime Ministers. The first was by our Prime Minister, Pandit Jawaharlal Nehru, in 1959, when Palden Thondup Namgyal, the King of Sikkim at that time, set up the Namgyal Institute of Tibetology. You will recall that at that time, in 1959, there was already a movement in Tibet and all the Buddhist books and literature, which were there, had to be kept somewhere and in this great

institution, called the Namgyal Institute of Tibetology, which is housed in Sikkim, with the help of Pandit Jawaharlal Nehru and the Government of India, at that time, this was set up.

Then the second was in the year 1982 when none other than our then Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi, visited the same institution. This institution is a vibrant institution housing an immense amount of resource in the area of Buddhist studies. I would, therefore, make a humble plea that the Director of Namgyal Institute of Tibetology be a member of the governing council of this wonderful university that is going to come because it links the Buddhists thought of that time, which is housed in this institution, to the new and upcoming university.

Finally, I would like to make another comment that as history repeats itself, now we find in the year 2010, the Nalanda University coming up as a centre of great learning. It is something which we all as Indians should be very proud of. With these words, I thank the Government and this House for, at least, giving full support to this Bill.

श्री ओम प्रकाश यादव (सीवान): महोदय, आपने बहुत ही महत्वपूर्ण विधेयक पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद करते हैं। बिहार महान जनता की तरफ से और अपने निर्वाचन क्षेत्र, देश रत्न डॉ. राजेन्द्र बाबू की पावन पवित्र जन्म स्थली सीवान की जनता की ओर से कोटि-कोटि केंद्र सरकार को धन्यवाद देंगे। श्रीमती सोनिया गांधी के प्रति आभार व्यक्ति करते हैं। देश के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के प्रति आभार व्यक्त करेंगे कि बिहार की गौरवमय इतिहास को पुनः दोहराने के लिए यह महत्वपूर्ण विधेयक लाए हैं। निश्चित रूप से बिहार देश का जगतगुरु रहा है, लेकिन विगत कुछ वÂाों में बिहार की शिक्षा में ह्रास हुआ है। बिहार की डिग्री की मान्यता दूसरे राज्यों में नहीं हो रही है। उसका कारण भी था कि नालंदा विश्वविद्यालय जैसे विद्यालय होने के बावजूद जो स्थिति पैदा हुई, उससे बिहार के शिक्षा जगत में शिक्षा का ह्रास हुआ। उससे बिहारवासियों को काफी लज्जित होना पड़ा। इसका कारण भी था, क्योंकि बिहार के शिक्षा मंत्री को डिग्री घोटाले कांड में जेल जाना पड़ा था, लेकिन केंद्र सरकार ने यह महत्वपूर्ण विधेयक ला कर एक बार पुनः दुनिया में बिहार के मान और सम्मान बढ़ाने के लिए जो महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, हम उनका स्वागत करते हैं और इस विधेयक का समर्थन करते हैं।

श्री सानछुमा खुंगुर बैसीमुथियारी (कोकराझार): सभापति महोदय, आपने नालंदा विश्वविद्यालय विधेयक, 2010 पर मुझे बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। सबसे पहले मैं इस विधेयक को प्रस्तुत करने के लिए यूपीए सरकार को बधाई देता हूं। लेकिन इस के साथ साथ मेरी कुछ मांग है और उन मांगों को भारत सरकार को अति जल्द ही पूरा करना पड़ेगा। पहली मांग है कि हमारे बोडोलैंड में भी एक केंद्रीय विश्वविद्यालय होना चाहिए। दूसरी मांग है कि आज हमारी सरकार ने सारे देश में कम से कम 30 केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए पॉलिसी अपनाई है। लेकिन हमारे बोडोलैंड में बोडो भाषा से बोडो माध्यम की जो शिक्षा विगत 1963 साल से चलकर आयी है, वह आज समाप्ति के कगार पर है। कम से कम बोडो माध्यम के 1000 प्राथमिक स्कूल, 500 अपर प्राइमरी स्कूल्स, 500 संख्या के हाई स्कूल्स को असम सरकार धनराशि के अभाव के बहाने पर प्रोविन्सेलाइजेशन सिस्टम में नहीं ला पाई है। हमारी बोडो भाषा को वर्ष 2003 में भारत सरकार ने भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया है। लेकिन हमारी बोडो भाषा की जो बोडो मीडियम शिक्षा है, वह समाप्त होने जा रही है, उसकी रक्षा कौन करेगा? Who will rescue the moribund Bodo medium schools? आज देश में 30 केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने की बात हो रही है। नालंदा विश्वविद्यालय आज कई शताब्दियों के बाद फिर बनने जा रहा है। उसके बाद आप लोग क्या करेंगे? निश्चित तौर पर सुपर यूनिवर्सिटी भी बनाने जा रहे हैं। लेकिन हमें क्या मिलेगा? आज जम्मू-कश्मीर की हालत बिगड़ रही है। बोडोलैंड अंचल के लोगों के दिल दिमाग में जो परेशानी है, उस परेशानी की भी सरकार को चिंता करनी चाहिए। उसकी तरफ भी सरकार को ध्यान देना होगा। इसलिए मेरी मांग है कि नालंदा विश्वविद्यालय की तरह एक कैम्पस हमारे बोडोलैंड में भी स्थापित करना चाहिए। बोडोलैंड जो स्टेट यूनिवर्सिटी बन चुकी है, उस बोडोलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी को केन्द्र सरकार को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का स्टेटस देना पड़ेगा और बोडो माध्यम के जितने प्राइमरी स्कूल्स हैं, अपर प्राइमरी स्कूल्स हैं और हाई स्कूल्स हैं उनको पुनर्जीवित करने के लिए केन्द्र सरकार को ठोस कदम उठाने होंगे, यह मेरी मांग है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRIMATI PRENEET KAUR): Mr. Chairman, Sir, in the first instance, may I express my appreciation and gratitude to the hon. Members for supporting the Bill and their valuable suggestions made regarding the establishment of the Nalanda University?

I would first like to clarify that the Ministry of External Affairs has taken on the task of drafting the legislation to establish the Nalanda University as the University is to be international in character. It is being supported by 15 other countries at the East Asia Summit meetings, and the idea would be to establish it as an international centre for excellence to remind us of the glory of ancient Nalanda.

The Nalanda University shall be established as a non-State, non-profit, secular and self-governing international institution with continental focus. The Government of India, as the host country, shall make the land available. The Government of the State of Bihar, which has acquired 446 acres of land for the University, has agreed to transfer this land to the Nalanda University.

Private donations, international contributions from other foreign Governments and member countries of the East Asia Summit are expected on a voluntary basis. Positive indications have been received from some of the member countries of the East Asia Summit for this project.

In fact, the Foreign Minister of Singapore, in his recent visit, has given an offer of four to five million dollars as private donations from there to set up a Library in the Nalanda University.

Regarding the various suggestions put forward by the hon. Members, I would like to submit that the Bill we will pass today gives only the framework and outline of the establishment of the University and its structure.

There are possibilities of incorporating these valuable suggestions made right from our opening speaker, Shri Shahnawaz Hussain to every other Member of Parliament here while drafting the statutes, Ordinances and Regulations following upon this legislation to be drawn by the governing body.

Dr. Girija Vyas ji said that besides reviving the ancient knowledge we should also project the present skills that are bringing our country into great prominence. So, when there are going to be six schools already in the existing draft, the Board of Governors has also envisaged another school which is for Information Technology to be set up. Schools can always be expanded, as we see the need to do so and as sufficient resources become available as there is an enabling clause to open any other school as decided.

I would especially like to thank Shri Satpathy ji for his rare support and appreciation that he has given for the step taken by the Government of India and the Ministry of External Affairs. He made a great reference to Pushpa Vihar University. I am sure that with the full support of all your people of Orissa and if your Government does put this step forward, you should be able to manage to set up again this ancient school of learning.

We do require as this was our international initiative to announce that we will be setting up the University at Nalanda at the earliest.

The early passage of this Bill by this august House will enable the Government to fulfil its international obligations and initiate action to set up the University.

With these words, I would request the House to pass this Bill.

MR. CHAIRMAN : The question is:

> "That the Bill to implement the decisions arrived at the Second East Asia Summit held on the 15th January, 2007, at Philippines and subsequently at the Fourth East Asia Summit held on the 25th October, 2009, at Thailand for the establishment of the Nalanda University in the State of Bihar as an international institution for pursuit of intellectual, philosophical, historical and spiritual studies and for matters connected therewith or incidental thereto, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: The House shall take up clause-by-clause consideration of the Bill.

The question is:

"That clauses 2 to 44 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clauses 2 to 44 were added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula, the Preamble and the Long Title

were added to the Bill.

SHRIMATI PRENEET KAUR: Sir, I beg to move:

"That the Bill be passed. "

MR. CHAIRMAN : The question is

"That the Bill be passed. "

The motion was adopted.